

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

समाचार संपादक

अखिलेश कुमार, 9431089053

विशेष संपादक

मुकेश कुमार सिंह

सहायक संपादक

कोमल सुल्तानिया

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

राजनीतिक व्यूगे

अमरेंद्र शर्मा 9899360011

प्रभाकर कुमार राय

प्रबंधक

अविनाश कुमार 8287266244

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार व्यूगे

अनूप नारायण सिंह 9546224277

क्राइम व्यूगे

एसएन श्याम

मुख्य संवाददाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशीष कुमार

जिला व्यूगे

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,
(ब्यूगे चीफ), 9334194515, 7677093032

समस्तीपुर : राजेश कुमार

चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993

मुंगेर : सिद्धांत

कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता
9973077043

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार 7903292877

दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841

स्वाति, रंजीत कुमार

ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर,
काली मंदिर रोड नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली
मंदिर रोड नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से
प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर ठोली,
डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए
लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। इसके लिए संपादक से
सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों
का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर

राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
माजपा

जय जयराम सिंह

JJRS CONSTRUCTION
PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 9, अंक : 12, अगस्त 2022, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दू मासिक पत्रिका



07

ऐतिहासिक हांगी प्रशांत किशोर की पदयात्रा



राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है तिरंगा ... 08



देश में जज्मना जाति व्यवस्था... 16



अमृतकाल और युवा भारत की चुनौतियाँ 09



ताइवान पर तनाव, अमेरिका का ... 22

नीतीश होने के मायने

कहते हैं इतिहास खुद को दोहराता है, वह बात अलग है कि वह कुछ अलग रूप में सम्मने आता है। बिहार में नीतीश कुमार का भाजपा व महागठबंधन में आना-जाना कुछ यही कहता है। अजब संयोग है मंगलवार को जहां महाराष्ट्र में शिवसेना सरकार में भाजपा विधायक मंत्रिमंडल में शामिल हो रहे थे, वहीं बिहार सरकार से उनकी विदाई हो रही थी। यूं तो लंबे समय से राजग में भाजपा व जदयू के रिश्तों में खटास चली आ रही थी। भले ही केंद्र व राज्य सरकार में वे साथ थे लेकिन विश्वास के धरातल पर दूर थे। कहीं न कहीं नीतीश कुमार को यह लगने लगा है कि भाजपा उनकी पार्टी की जमीन कुतर रही है। पहले विधानसभा चुनाव में लोक जनशक्ति पार्टी के चिराग पासवान द्वारा नीतीश के खिलाफ मुहिम चलाकर जदयू की सीटें कम करने के आरोप लगाये गये, फिर पार्टी के अध्यक्ष व सांसद के भाजपा में शामिल होने को नीतीश कुमार ने गंभीरता से लिया। बहरहाल, जिस तेजी से भाजपा से नाता तोड़ नीतीश ने राजद का दामन थामा, उसके सीधा असर बिहार से लेकर दिल्ली की राजनीति तक पड़ना लाजमी है। निस्संदेह, सबाल ये भी उठेगा कि पांच साल पहले कदाचार के आरोप लगाकर जिस राजद को छोड़ नीतीश ने भाजपा का दामन थामा था, क्या उस दल में राजनीतिक शुचिता कायम हो गई है? वे तुरत-फुरत आठवीं बार मुख्यमंत्री भी बन गए हैं। तेजस्वी यादव उपमुख्यमंत्री बने हैं। उनके साथ कांग्रेस, वाम दल समेत कई छोटे दल शामिल हैं। निस्संदेह, इसके मूल में एक सशक्त विपक्ष की आकांक्षा भी निहित है। इस राजनीतिक घटनाक्रम की सरल व्याख्या यह है कि पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा व जदयू के संबंधों में जो खटास पैदा हुई थी उसकी परिणति इस अलगाव के रूप में हुई है। लेकिन इसके अलावा कई कारण अलगाव की वजह बने। कई मुद्दों पर जदयू सैद्धांतिक रूप से भाजपा से सहमत नहीं थी। यूं तो बिहार विधानसभा अध्यक्ष से लेकर राज्य भाजपा प्रभारी के व्यवहार को लेकर नीतीश कुमार नाराज थे। लेकिन हाल ही भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पटना में क्षेत्रीय दलों के बाबत की गई टिप्पणी ने आग में धी का काम किया। जिसमें उन्होंने कहा था कि कई राष्ट्रीय पार्टियां सिमट गईं और अब क्षेत्रीय दलों का पराभव होगा। निश्चित रूप से नीतीश ने इसे जदयू के लिये खतरे की घंटी के रूप में लिया। इसके अलावा कई और मुद्दे थे जिनको लेकर नीतीश भाजपा से नाराज चल रहे थे। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा, जाति आधारित जनगणना, एनआरसी, अग्निपथ योजना पर वे अपने तेवर दिखा चुके थे। हाल ही में बिहार विधानसभा के समारोह के लिये छपे निमंत्रण पत्र पर उनका नाम न छापने को भी उन्होंने गंभीरता से लिया। यही वजह है कि राष्ट्रपति व उप राष्ट्रपति चुनाव के बीच हुए समारोहों व नीति आयोग की बैठक में नीतीश नजर नहीं आये। वहीं राजनीतिक पंडित केंद्र की राजनीति में नरेंद्र मोदी के विकल्प के रूप में उभरने की नीतीश कुमार की महत्वाकांक्षा को भी इस फैसले के मूल में देख रहे हैं। कुछ लोग नीतीश के फैसले को राजनीतिक अवसरवाद के रूप में देख सकते हैं, लेकिन वहीं कुछ लोग मानते हैं कि वे पार्टी के अस्तित्व को बचाने के लिये भाजपा से अलग होकर राजद के बगलगार हुए हैं। लेकिन एक बात तो तय है कि अपने बोट बैंक व राजद, कांग्रेस तथा वाम समर्थक वर्ग के बूते वे न केवल बिहार बल्कि झारखण्ड व उत्तर प्रदेश में भाजपा के लिये बड़ी चुनौती खड़ी कर सकते हैं। यह तो तय है कि इस घटनाक्रम के बाद भाजपा प्रतिक्रिया देगी। यानी विधानसभा के शेष कार्यकाल में राजनीतिक लड़ाई तेज ही होगी। वहीं दूसरी ओर राजग के सम्मने न केवल भाजपा में मुख्यमंत्री का चेहरा जुटाने की चुनौती होगी, वहीं अगले आम चुनाव में उसे बिहार में कड़ी चुनौती का सम्मान करना पड़ेगा। शपथ ग्रहण के बाद नीतीश जिस तरह भाजपा व नरेंद्र मोदी पर हमलावर हुए हैं, उसके निहितार्थ समझना कठिन नहीं है।

अभिजीत कुमार
संपादक

9431006107

cbhindi.news@gmail.com



नीतीश ने फिर मारी पलटी भाजपा सत्ता से बेदखल



अखिलेश कुमार

बिहार की राजनीति ने एक बार फिर करवट ली है जिसके कारण भारतीय जनता पार्टी एक राज्य की सत्ता से बेदखल हो गई। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने 16 वर्षों के मुख्यमंत्रीत्व काल में चौथी बार पाला बदले और राजग के बदले महागठबंधन का सदन में नेता के रूप में 10 अगस्त 2022 को आठवीं बार मुख्यमंत्री की शपथ ली।

उन्हें भाजपा के विरोध में खड़ा सोन पर राष्ट्रीय जनता दल, कॉग्रेस, भाकपा माले सहित सभीदलों ने समर्थन पत्र पर हस्ताक्षर किया और सदन में बहुमत के लिए 122 सदस्यों का समर्थन के बदले 164 का समर्थन का भरोसा दिया। नीतीश कुमार के साथ मंत्री के रूप में राजद विधायक दल के नेता तेजस्वी यादव ने भी शपथ ली जिन्हें अधिसूचना जारी कर उप मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी मिलेगी। सदन में बहुमत हासिल करने के लिए 24 अगस्त को विशेष सत्र बुलाया गया है। उसी दिन नये विधानसभा अध्यक्ष का भी चुनाव होगा। जबकि 25 अगस्त को बिहार विधान परिषद् का विशेष सत्र बुलाया गया है। इससे पहले वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष



विजय कुमार सिन्हा तथा विधान परिषद् के कार्यकारी सभापति अवधेश नारायण सिंह द्वारा अपने पद से इस्तीफा देने की पुरी संभावना है।

देश की आजादी के लिए भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में 9 अगस्त को हीं दिया गया था। इस तिथि को भारतवासी अगस्त क्रांति के रूप में याद करते हैं। उस घटना के ठीक 80 वर्ष बाद पाला बदलने के लिए नीतीश कुमार द्वारा 9 अगस्त की तिथि का चुनाव यह संकेत देता है कि इस बार वो भाजपा के साथ आर-पार की लड़ाई के मूड़ में हैं और अब पुनः अपने राजनीतिक साथी से हमेशा के लिए दुश्मनी ठान ली है।

दरअसल नीतीश कुमार भाजपा द्वारा असम, गोवा, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के संदर्भ में उठाए गए कदमों से भयभीत थे। पहले वो बिहार की सत्ता भाजपा को हस्तांतरित करना चाहते थे, लेकिन इसके बदले खुद को उप राष्ट्रपति बनने की मशा पाल रखें थे। इस संदर्भ में परोक्ष रूप से भाजपा खेमें में संदेश भी भेजवा दिया था। परन्तु उधर से निराशा मिलने और बिहार के सत्ता से बेदखल करने के लिए भाजपा के द्वारा षड्यंत्र की आशंका ने नीतीश कुमार को बिहार के राजनीति में परिवर्तन करने के लिए मजबूर किया।

राजग गठबंधन से अलग होकर महागठबंधन का दामन थामने से पहले नीतीश कुमार ने गंभीरता से कदम उठाए और बिहार के राजनीति के साथ केंद्र की राजनीति में अपनी भूमिका के संभावनाएं तलाशी। कॉंग्रेस के बैरे विपक्ष के रूप में उभर रही पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का छवि वहां लगातार उजागर हो रहे भ्रष्टाचार के मामले से कमज़ोर रहा है, इसका फायदा भी नीतीश कुमार को मिलने की उम्मीद जगी और भाजपा द्वारा पार्टी तोड़कर बिहार का सत्ता हथियाने की आशंका के बीच मुख्यमंत्री पद को सुरक्षित रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी महत्वपूर्ण विपक्षी नेता की भूमिका निभाने तथ करने की योजना बनाई। इसका स्क्रिप्ट वो महिनों पहले से लिखना आरंभ कर दिये थे।

सूत्र बताते हैं कि जब सोनिया गांधी को कोरोना हुआ था तो समाचार पूछने के बहाने नीतीश कुमार ने कॉंग्रेस के साथ अपनी संभावनाएं तलाशी। सोनिया गांधी ने उन्हें गहुल गाँधी से बात करने को सलाह दी और इसके लिए नीतीश कुमार ने तेजस्वी यादव को लगाया। भाजपा का दामन छोड़ने से पहले नीतीश एक मजबूत समर्थन हासिल करना चाहते थे, ताकि असम, गोवा, मध्यप्रदेश आदि राज्यों के तरह बिहार में तोड़फोड़ और खरीद फरोख्त से भी उन्हें पदमुख नहीं किया जा सके। और वे अपने इस रणनीति में सफल भी हुए।

जाहिर है कि नीतीश कुमार अब केन्द्र के खिलाफ अपना तेवर कड़े करेंगे। क्योंकि उन्हें यह भय तो सत्ता हमेशा सता रहा है कि सबसे बड़े राजदार आरसीपी सिंह आज भाजपा के प्रभाव में आ गये हैं और पिछले 2122 वर्षों के शासन काल में हुए खामियों के माध्यम से केन्द्रीय एजेंसियों के सहारे उनकर कभी भी आघात हो सकता है।

इसलिए 10 अगस्त को भाजपा छोड़ महागठबंधन के साथ शपथ लेते हीं उनका पहला व्यायान आया कि 'देखिये 2014 वाला 2024 में जीतेगा या नहीं।' क्षेत्रीय



दलों को भाजपा के विरोध में एकजुट करने के लिए तेजस्वी ने भी कहा कि 'भाजपा क्षेत्रीय दलों को समाप्त करना चाहती है और सहयोगी दलों को हड्डप रही है।' दरअसल नीतीश कुमार बिहार में महागठबंधन के साथ होकर पुरे देश में मंडल बनाम कमंडल का वो माहौल बनाना चाहते हैं जो 90 के दशक में था। लोकतंत्र की जननी बिहार राजनीतिक रूप से हमेशा काफी महत्वपूर्ण

रहा है। देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के लगातार बढ़ते प्रभाव से भाजपा विरोधी सोच रखने वाले लोगों में बेचैनी स्वाभाविक है, परन्तु इसे भुनाने में अभी तक मुख्य विपक्षी दल कॉंग्रेस असफल रही है। नीतीश कुमार को लगता है कि वे अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, मुस्लिम वर्गों को लेकर देश में एक नया राजनीतिक माहौल बना सकते हैं।



स्वर्ण से स्थाह हो रहा है नीतीश कुमार



बात वर्ष 2008 के आसपास का है, तब बिहार में सड़क, कानून व्यवस्था आदि क्षेत्र में विकास की गति का रफ्तार काफी तेज था। इस दौरान मैं जदयू के वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष वशिष्ठ नारायण सिंह से साथ बिहार के विकास को लेकर चर्चा कर रहा था। चुकि उस समय वशिष्ठ नारायण सिंह और नीतीश कुमार के बीच दुरी बन गई थी और राजनीतिक मतभेद चल रहा था। इसके बावजूद वशिष्ठ नारायण सिंह ने उनके बारे जो बात कही थीं, शायद वही बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार के स्वर्ण काल के रचना का कारक बना था।

वशिष्ठ नारायण सिंह ने कहा था नीतीश और लालू में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि लालू सत्ता में रहने के दौरान अधिकांश समय नेताओं के साथ दरबार लगाकर

गप्प करने में व्यतीत कर देते हैं, जबकि नीतीश कुमार इससे काफी परहेज करते हैं और किसी कार्य को बेहतर तरीके से कैसे किया जाए, इसी पर केंद्रित होकर एक्सपर्ट लोगों से सलाह मशविरा करने पर बल देते हैं। तब मतभेद होने के बावजूद वशिष्ठ नारायण सिंह ने नीतीश कुमार के बारे में जो निष्पक्ष अभिव्यक्ति की थी वह पूर्णतः सत्य था।

लैकिन यह बात एक युग यानि करीब 12 वर्ष पहले की है। हालांकि उससे पहले नीतीश को अपने जिम्मेदारी के प्रति संवेदनशीलता मैं अपने आंखों से देख चुका था, जिसपर वशिष्ठ नारायण सिंह की अभिव्यक्ति ने मुहर लगा दी थी। दरअसल उस समय मेरा हिन्दुस्तान अखबार में डेहरी से रिपोर्टिंग करने का शुरूआती दौर था। 9 सितम्बर 2002 की रात्रि में

औरंगाबाद के रफीगंज के समीप धावा नदी पुल पर राजधानी एक्सप्रेस दुर्घटना ग्रस्त हुई थी, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को जान गंवाने पड़े थे। वर्तमान में हिन्दुस्तान के उप संपादक बड़े भाई प्रियरंजन जी का निर्देश आया कि पटना और दिल्ली से दुर्घटना की एक्सक्लूसिव फोटो चाहिए आपको वहाँ जाना है। वह ऐसा दौर था जब अखबार में फोटो खिचकर कलर लैब में साफ करने के बाद कार्यालय में भेजना पड़ता था, जिसका पचास रुपए प्रति प्रकाशित फोटो का भुगतान होता था।

मुझे वहाँ पहुंचने में विलम्ब हुआ, सुबह करीब 10 बजे घटना स्थल पहुंचा। लाशों की लम्बी कतार लगी थी और देखा कि रेल मंत्री के रूप में नीतीश कुमार खुद राहत कार्यों का निगरानी कर रहे थे। पता चला कि सम्पूर्ण क्रांति एक्सप्रेस से वे दिल्ली जा रहे थे और कानपुर में जैसे ही दुर्घटना की उन्हें खबर मिली तो स्पेशल ट्रेन से घटना स्थल पहुंच कर राहत कार्य का निगरानी में लग गए। हमें आज भी याद है कि दोपहर तक बिना कुछ खाए पिए रेलवे लाइन के किनारे से राहत का काम देख रहे थे और फिर औरंगाबाद के सांसद सुशील कुमार सिंह के यहाँ जाकर दोपहर बाद फ्रेश हुए थे। यह नीतीश कुमार की अपनी जवाबदेही के प्रति सजगता और समर्पण का घोतक था। और उनकी जिम्मेदारी के प्रति यही सजगता व समर्पण का भाव बिहार के मुख्यमंत्री बनने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

इधर नीतीश कुमार के बेहतर राजनीतिक कार्यशैली से बिहार के जनता में प्रभाव बढ़ाने लगा और राज्य में बढ़ते अपराध, जर्जर सड़क, बदहाल अस्पताल जैसे समस्या से जुँग रहे लोगों ने नीतीश कुमार को उम्मीद भरी निगरानी से देखना आरंभ किया। चुकि कमजोर होती कॉर्प्रेस व विखरते वामपंथी के कारण बिहार में नीतीश कुमार हीं विकल्प के रूप में नजर आ रहे थे। उन्होंने भाजपा के मुम्बई अधिवेशन 1996 में हीं जार्ज फर्नांडीज के नेतृत्व में उस समय हाँथ मिला लिया था जब शिवसेना को छोड़कर प्रायः पुरे देश के राजनीतिक दल उसे अछूत मानते थे।

हालांकि 1995 के बिहार विधानसभा चुनाव में हीं लालू यादव का साथ छोड़ कर आनंद मोहन तथा नीतीश कुमार ने अलग अलग प्लेटफॉर्म से बिहार में लालू विरोधी मतों को अपने अपने पक्ष में करने का प्रयास किया था। उस दौरान यदि नीतीश कुमार भाकपा माले के जगह आनंद मोहन के बिहार पीपुल्स पार्टी से तालमेल करके मैदान में उतरे होते तो संभव था कि बिहार का राजनीतिक पाशा उसी समय पलट गया होता।

1995 में निराशाजनक परिणाम के बाद नीतीश कुमार जार्ज फर्नांडीज जैसे केन्द्रीय राजनीति के माहिर खिलाड़ी के छत्रछाया में चलने लगे और इसका लाभ यह मिला कि जार्ज साहब ने बिहार के राजनीति में भाजपा को लालू विरोधी खेमा का बी टीम बनाकर नीतीश कुमार को अगली पक्षी में खड़ा कर दिया।

आनंद मोहन बिहार में संघर्ष की मुख्य भूमिका से धिरे धिरे किनारे होते गए, इसमें बिहार से बाहर लग्जे समय तक उनका देहरादून प्रवास भी नकारात्मक प्रभाव डाला। इधर केन्द्रीय मंत्री मंडल में शामिल होने या फिर नहीं होने पर भी बिहार के मतदाताओं के बीच हर मुद्दे पर नीतीश कुमार सक्रिय रहे तथा खुद को लालू यादव का विकल्प बनकर उभरने में सफलता हासिल कर ली। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्ष 2005 में लालू-राबड़ी से सत्ता हथियाने में वो कामयाब हो गये।

वर्ष 2005 में 24 नवम्बर को भाजपा के साथ पूर्ण बहुमत वाली सरकार के लिए जब नीतीश कुमार ने शपथ ली, उस समय बिहार में अपराध का ग्राफ काफी उपर था, सड़के बदहाल थी, राज्य का आर्थिक स्थिति भी कमज़ोर था। हालांकि नीतीश कुमार की तत्कालीन समता पार्टी सत्ता में आने के लिए अपराधी चरित्र के लोगों को टिकट देने में कहीं पीछे नहीं रही। दर्जन भर से अधिक बड़े और संगीन अपराधों के आरोपी उनके दल के टिकट पर निर्वाचित होकर सदन में पहुँचे थे। इसके बावजूद सत्ता सम्भालते ही नीतीश कुमार ने कानून व्यवस्था को प्राथमिकता सूचि में सबसे उपर रखा। साथ हीं सड़क, अस्पताल, विद्यालय और सरकारी कार्यालयों की स्थिति सुधारने के लिये सकारात्मक प्रयास किए और इसका सुखद परिणाम भी बिहार की जनता के सामने आने लगा। उनके दल से बहुत सारे अपराधी विधायक जरूर बने थे लेकिन किसी को भी मनमानी करने की छूट नहीं मिली।

बिहार में कानून व्यवस्था पर नियंत्रण बनाने व आधारभूत संरचना को मजबूत करने के साथ ही साथ पार्टी में एकाधिकार कायम करने के लिए भी नीतीश कुमार ने रणनीति के तहत अपने प्रमुख राजनीतिक सहयोगियों को धिरे धिरे किनारा करने के तरफ कदम बढ़ाना आरंभ किया। इसके तहत जॉर्ज फर्नांडीज, आनंद मोहन, दिग्विजय सिंह, वशिष्ठ नारायण सिंह सरीखे लोगों को उन्होंने निशाना बनाया। हालांकि सबसे पुराने अभिन्न राजनीतिक साथी वशिष्ठ नारायण सिंह से कुछ वर्षों बाद पुनः निकटता बढ़ गया जो आज तक कायम है। दरअसल नीतीश कुमार और वशिष्ठ नारायण सिंह का विद्यार्थी जीवन से जो संबंध बना वह संबंध पारिवारिक रिश्ते में तब्दील हो चुका है, और यही कारण है कि कुछ वर्षों तक चले मतभेद तथा बनी दूरी समाप्त हो गई। लेकिन जॉर्ज फर्नांडीज, आनंद मोहन, दिग्विजय सिंह जैसे लोगों का हश्र क्या हुआ? यह किसी से छुपी नहीं है।

बिना किसी दबाव के शासन व्यवस्था पांच वर्षों तक नियंत्रित करने के दौरान 2005 से 2010 के बीच बिहार में विकास के गति को एक नया आयाम मिला, और इससे नीतीश कुमार की देश में भी एक अलग पहचान बनी। उनके साथ भाजपा ने भी हर मुद्दे पर आंख मूँद कर समर्थन किया। चुकि जॉर्ज फर्नांडीज हाशिएं पर चले गए, जदयू में उनको चुनावी देने वाले दिग्विजय सिंह 2009 के चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप जीत हासिल किये थे, और वे नीतीश कुमार को 2010 चुनाव में चुनावी देने के लिए रणनीति पर काम कर रहे थे, परन्तु जून 2010 में ही उनका देहांत हो गया। वशिष्ठ नारायण सिंह को चुनाव से पहले पुनः साथ मिला लिए। भाजपा एक तरह से सुशील कुमार मोदी पर हीं बिहार के निर्णय में अहमियत दे रखी थी।



और सुशील कुमार मोदी ने बिहार में भाजपा के राजनीति को इस तरह का स्वरूप देने का प्रयास किया कि वह जदयू की बी टीम ही बना रहे। नीतीश कुमार अपने कार्य और रणनीति के बदौलत 2010 के चुनाव में ऐसा बेहतर प्रदर्शन किये, जिसकी उम्मीद उन्हें भी नहीं थी। इस चुनाव परिणाम ने एक तरफ जहां पुरे देश में उनका राजनीतिक कद बढ़ा दिया।

इधर जब 2014 लोकसभा चुनाव में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने कट्टर हिन्दू छवि बनाने वाले गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री का उम्मीदवार घोषित किया तो नीतीश कुमार की राजनीतिक महत्वाकांक्षा बढ़ गई। उन्हें लगा कि मैं भाजपा विरोधी विचारधारा वाले देश के राजनीतिक दलों के तरफ से प्रधानमंत्री उम्मीदवार का चेहरा बन सकता हूँ। उन्हें ऐसा विश्वास था कि भाजपा सहयोगी दलों के साथ भी पूर्ण बहुमत नहीं आएगी और ऐसी विश्वास में उन्हें भाजपा विरोधी दल पीएम के लिए स्वीकार कर लेंगे। इसी महत्वाकांक्षा को लेकर उन्होंने नरेन्द्र मोदी के बिहार दौरे के दौरान खाना खिलाने के प्रोग्राम को ऐन वक्त पर निरस्त कर दिया, जिसे 'खाने का थाली छिनाना' कहा जाता है। यह भाजपा से अलग होने का बहाना बना और उन्होंने भाजपा से रिश्ता तोड़ दिया।

नीतीश कुमार के खिलाफ 19 जून 2013 को बिहार विधानसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान हुआ, हालांकि अविश्वास प्रस्ताव लाने वाली भाजपा खुद मतदान में हिस्सा नहीं लिया और सदन से वाक आउट कर दिया था, जबकि लालू की पार्टी राजद के विधायकों ने पूर्व धोषणा के अनुसार नीतीश कुमार के खिलाफ सदन में मतदान किया। संयोग से उस दिन मैं पटना में हीं था और शाम को हिन्दुस्तान के वरिष्ठ पत्रकार बड़े भाई प्रियरंजन जी के साथ लालू के आवास पर चले गए थे। अविश्वास प्रस्ताव सहित कई विन्दुओं पर करीब एक घंटे तक चर्चा हुआ। उसी दौरान कॉग्रेस

के वरिष्ठ नेता अहमद पटेल का फोन भी लालू जी के पास आया था और लालू यादव ने कॉग्रेस द्वारा अपने स्टैंड के विपरीत नीतीश कुमार के खिलाफ मतदान नहीं करने के निर्णय की शिकायत भी की तथा कहा कि केवल हमने नीतीश के विरोध में मतदान किया, यहाँ तक कि अविश्वास प्रस्ताव लाने वाली खुद भाजपा ने भी नीतीश कुमार के खिलाफ मतदान नहीं किया।

दरअसल उस दिन नीतीश कुमार ने जदयू के 118, चार निर्दलीय, एक सीपीआई के विधायकों को लेकर सरकार बचाने के लिए 122 सदस्यों की जारी आकड़ा को पार कर लिया।

भाजपा से अलग होने के बाद लोकसभा चुनाव 2014 तक नीतीश कुमार ने भाजपा का कट्टु आलोचना जारी रखा। दरअसल 2010 विधानसभा चुनाव में उम्मीद से अधिक जनता का समर्थन मिलने के बाद नीतीश कुमार को यह वहम हो गया था कि यह केवल मेरे चेहरे पर मिला समर्थन है, तथा वो भूल गए कि भाजपा के साथ और 2005 से 2010 के बीच किये कार्यों का यह प्रतिफल था। जब 2014 लोकसभा चुनाव में 16 मई को हुए मतगणना के बाद बिहार के 40 लोकसभा सीटों में से मात्र 2 पर हीं जदयू सिमट कर रह गई तो अपने ताकत और भ्रम का एहसास हो गया, तथा हाताशा निराश नीतीश ने 17 मई को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। और वो महादलित वर्ग से आने वाले जीतन राम माझी को यह समझकर मुख्यमंत्री बनाए कि माझी राजनीतिक रूप से काफी कमज़ोर हैं, ऐसे में सरकार का रिपोर्ट कंट्रोल मेरे पास हीं रहेगा। परन्तु कॉग्रेस कल्चर से निकल कर आए माझी सभी निर्णय में ही रही दखलांदाजी को लंबे समय तक बर्दाश्त करने के मुड़ में नहीं रहे, तथा नीतीश कुमार की हर काम में दखलांदाजी का विरोध करते हुए कई निर्णय अपने विवेक से लेने लगे। स्थिति ऐसी बनी कि जिस माझी को आगे कर वह दलित वोट का ध्रुवीकरण अपने पक्ष में करना चाहते थे वही दलित नेता उनके आंखों का कांटा बन गया। तथा 9 महीने में हीं उन्होंने जिस नैतिकता को आधार बना कर इस्तीफा दिया था उस नैतिक मूल्यों की बलि देकर माझी को कुर्सी से बेखल कर 22 फरवरी 2015 को पुनः स्वयं मुख्यमंत्री पद की कुर्सी संभाल ली।

बिहार हीं नहीं, बल्कि पुरे देश में नरेन्द्र मोदी का बढ़ते प्रभाव के बीच बिहार में लोकसभा के चालीस 40 सीटों में दो पर सिमटने के बाद नीतीश कुमार को अपने ताकत का अंदाजा लग गया और जनता के समर्थन का भ्रम भी टूट गया। दरअसल नीतीश कुमार को यह उम्मीद था कि जो हमने दलित समुदाय को तोड़कर महादलित तथा पिछडे से अलग होकर अति पिछडे उनके समर्थन में खुल कर मतदान करेंगे, साथ ही समय में भाजपा के कथित हिन्दूवादी नीति का विरोध करने के कारण मुस्लिम समुदाय का समर्थन भी उन्हें मिल जाएगा और वो बिहार में सबसे बड़े दल के रूप में स्थापित हो जाएंगे, परन्तु उनके उम्मीद पर लोकसभा चुनाव 2014 का परिणाम ने पानी फेर दिया।

चुकि वो भाजपा और उसके नीतियों पर तिखे प्रहर किये थे, ऐसे में उससे इतना जल्दी पुनः हाथ मिलाने में शर्मिंदगी महसूस होना स्वाभाविक था। इसलिए नीतीश कुमार ने बिहार विधानसभा चुनाव 2015 में पुनर्वापसी के लिए उसी लालू यादव से हांथ

मिलाने निर्णय लिया, जिसके कार्यशैली का विरोध कर वो सत्ता में आए थे। लालू यादव के साथ गठबंधन के दौरान मंच साझा करते समय नीतीश कुमार का बॉडी लैंगेज यह स्पष्ट दर्शाता था कि गले मिल रहे हैं, परन्तु दिल नहीं।

खै! मजबुरी हीं सही, नीतीश कुमार के लिए यह गठबंधन जितना जरूरी था उतना ही जरूरी लालू यादव के लिए भी था, क्योंकि लालू यादव का लोकसभा और विधानसभा चुनाव में सीटें लगातार घट रही थीं और चल रहे चारा घोटाले में जेल जाने से पहले बेटे को राजनीतिक दायित्व सौपने के लिए प्लेटफार्म की जरूरत थी, जो नीतीश की मजबुरी ने 2015 बिहार विधानसभा चुनाव में पुरी कर दी। दोनों दलों के गठबंधन ने जहाँ नीतीश कुमार की सत्ता में पुनर्वापसी करा दी, वहाँ लालू यादव के परिवार और राष्ट्रीय जनता दल को सत्ता में भागीदारी के साथ राजनीतिक ताकत में भी काफी उच्छ्वास आ गया। इस चुनाव में नीतीश कुमार के जदयू से लालू यादव के राजद को ज्यादा सीटें हासिल हुईं।

राजद के साथ गठबंधन में नीतीश कुमार को धिरे धिरे घुटन महसूस होने लगी। कारण यह था कि भाजपा के साथ सरकार में निर्णय लेने की जो मनमानी नीतीश कुमार का चल रहा था वैसा इस गठबंधन में नहीं चलता था। कारण कि भाजपा के साथ सुशील कुमार मोदी उप मुख्यमंत्री रूप में नीतीश कुमार के हर निर्णय पर हाथी भरते नजर आ रहे थे, परन्तु यहाँ उप मुख्यमंत्री के रूप में तेजस्वी यादव को सरकार में जदयू से बड़ा दल होने और अपनी राजनीतिक दिस्सेदारी को लेकर बात बात पर ठन जाती थी। ऐसे में नीतीश को सुशील कुमार मोदी जैसा हर बिन्दुओं पर हाथी भरने वाले उप मुख्यमंत्री की याद सताने लगी और वे राजद का दामन छोड़ कर भाजपा के आंचल में पुनः जाने के लिए बेचैन हो गये।

कहा जाता है कि एक रणनीति के तहत तेजस्वी यादव के विरुद्ध दस्तावेज़ को नीतीश कुमार के 'लोग' ही तेजस्वी यादव पर राजनीतिक हमला के लिए सुशील कुमार मोदी को उपलब्ध कराने लगे, ताकि गडबडी का आरोप लगने के बाद गठबंधन तोड़ कर भाजपा से पुनः जुड़ने का राह बन सके। गुप्त समझौते के तहत भाजपा से अपनी हीं सरकार पर हमला करवाकर व गठबंधन तोड़कर हमलावर भाजपा के साथ हाथ मिलाकर नीतीश कुमार 27 जुलाई 2017 को महागठबंदन से राजग के गठबंधन के मुख्यमंत्री की उपाधि धारण कर ली। इसी पर लालू यादव ने कहा था कि "नीतीश कुमार के पेट में दांत है।"

दरअसल 2013 से 2017 के बीच नीतीश कुमार के राजनीतिक निर्णय ने न केवल उनके व्यक्तिगत छवि पर प्रतीकूल प्रभाव डाला, बल्कि जो उन्होंने पिछले आठ साल के मुख्यमंत्रीत्व कार्यकाल में बिहार के चौतरफा विकास की गति को अविल धारा का स्वरूप प्रदान किया था उसमें ठहराव आ गया। 2013 से 17 के बीच उन्हें अपने हीं निर्णय के कारण कई बार उन्हें मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा तथा शपथ देना देना पड़ा। जिसके चलते न केवल उनके उपर विरोधी के साथ अपने भी व्यंग तथा कटाक्ष करने लगे। यहाँ तक कि पलटु राम जैसे उपनाम देकर उन पर व्यंग्य होने लगा। इसमें न केवल नीतीश कुमार के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, बल्कि जो पिछले कीरीब 18 वर्षों तक राजनीतिक दोस्ती में भाजपा तथा जदयू



कार्यकालों के बीच अटूट विश्वास बन गया था वह भी ध्वस्त हो गया और 2017 में पुनः मिलन के बावजूद एक दुसरे के प्रति अविश्वास की नींव कायम है। जो नीतीश कुमार 1994 में जनता दल से अलग होकर संघर्ष के बाद केन्द्रीय मंत्री मंडल के सदस्य अथवा बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में बेहतर प्रदर्शन के बदौलत विकास व स्वच्छ राजनीति करने वाले लोग में पहचान बनाई थी, उन्हें 2013 से 2017 के बीच खुद के बदलते राजनीतिक निर्णय के कारण पलटू राम, कुर्सी कुमार आदि व्यंगात्मक उपाधियों से नवाजा जाने लगा। चार वर्षों में दल बदल की घटनाओं और इस दौरान दल विशेष व नेता के प्रति इनके द्वारा कभी प्रशंसा तो कभी तिक्खी आलोचना के विडियो वायरल कर लोग इनका मजाक उड़ाने लगे। इस अवधि में नीतीश सरकार द्वारा लिए गए शराबबंदी, दहेज प्रथा, बालू नीति आदि कई निर्णय धरातल पर उतारने में न केवल विफल रहा, बल्कि ऐसे निर्णयों के आड़ में बिहार के काली कमाई का एक समानांतर अर्थव्यवस्था कायम हो गया है। और इसमें सत्ता के साथ बैठने वाले लोग भी सम्प्रिय नजर आते हैं। सरकार के नीतिगत फैसले की विफलता से सरकार के मुखिया पर उंगली उठना लाजिमी है।

वर्ष 2020 बिहार विधानसभा चुनाव में तो नीतीश कुमार की भद्र पीट गई और वे मात्र 43 सीटों पर सिमटकर रह गये। इसके बावजूद भाजपा ने दरियादिली दिखाते हुए चुनावी बाद के मुताबिक उन्हें मुख्यमंत्री का पद दिया। लेकिन दोनों दलों के बीच 20 माह के भीतर ही खटास उत्पन्न हो गया। और वे 9 अगस्त 2022 को भाजपा का दामन छोड़कर आपने मुख्यमंत्रीत्व काल में चौथी बार पलटी मारते हुए फिर एक बार राजद का दामन थाम लिये। करीब 21 वर्षों के अपने मुख्यमंत्रीत्व

काल में नीतीश कुमार चार बार पलटी मारे और आठवीं बार 10 अगस्त 2022 को बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। बिहार के राजनीतिक परिवेश का लाभ उठाते हुए वो बार बार पलटी मारने के साथ मुख्यमंत्री पद तो हासिल करते रहे, लेकिन उनका 2012-13 में जो चमकता राजनीतिक छवि राष्ट्रीय स्तर तक बन गया था वह धीरे धीरे एक दशक में स्थान होते चला गया।

तो क्या बिहार के चाणक्य से मात दे दी अमित शाह को?

बिहार में पिछले 7 अगस्त से 9 अगस्त तक जबरदस्त राजनीतिक दांवपेंच तथा रस्साकरी चला। सत्ता में उलट फेर को लेकर गुण गणित और समझौते का जो दौर चल रहा था उसे अन्तिम समय तक भाजपा नहीं समझ पायी और राजनीतिक चाणक्य, विकास पुरुष, सुशासन बाबू से पलट्राम तक नामों से नवाजे जाने वाले बिहार के मुख्यमंत्री ने मौन रहकर गुप्त-चुप तरिके से भाजपा को चौत कर दिया और ढाई दशक से अधिक समय तक साथ रहने वाला राजनीतिक दल के नेता स्थिति और नीतीश कुमार का आकलन करने भी विफल रहे।

हालांकि भाजपा नीतीश कुमार पर पाश फेंकने में कोई कसर नहीं छोड़ा था। नीतीश कुमार द्वारा भाजपा से दूरी बनाने का संकेत लगातार मिल रहा था। राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति पद पाने की लालसा से निराशा मिलने के बाद कोरोना के बहाने राष्ट्रपति शपथ ग्रहण समारोह से लेकर पटना में गृहमंत्री के आगमन पर न मिलने तथा नीति आयोग की बैठक से दूरी बनाना बहुत कुछ कह रहा था। उधर भाजपा भी नीतीश कुमार के मूड का पता चलने के बाद पाश फेंकना आरंभ कर दिया था। इसी के तहत गृह मंत्री अमित शाह ने 31 जुलाई को बिहार आगमन के दौरान घोषणा तक कर दी कि 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में भी एनडीए के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हीं होंगे। दरअसल ऐसा बोलकर भाजपा बिहार के लोगों में यह संदेश देने का प्रयास किया कि यदि नीतीश कुमार महागठबंधन में जाते हैं तो इसका दोषारोपण भाजपा पर नहीं लगे। हालांकि भाजपा चिराग पासवान के साथ नजदीकी बढ़ते हुए यह संदेश भी दे रहा था कि बिहार में राजग गठबंधन नीतीश कुमार के अनुसार नहीं, बल्कि भाजपा के अनुसार बनेगा। इधर जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह द्वारा चिराग पासवान क आरसीपी सिंह के बहाने परोक्ष रूप से भाजपा पर लगातार हमला बोलने का घटनाक्रम अनायास हीं नहीं था। केंद्र के संभावित मंत्रीमंडल विस्तार में जदयू के शामिल नहीं होने की घोषणा तथा महंगाई के विरोध में राजद के प्रदर्शन का भी परोक्ष रूप से समर्थन कर 7 अगस्त को हीं ललन सिंह जदयू का मंशा स्पष्ट कर दिये थे। इसके बावजूद नीतीश कुमार की चुप्पी पर भाजपा अन्तिम समय तक भ्रम में रहा।

गैर करने वाली बात यह थी कि पिछले कई दिनों से राजद के किसी नेता द्वारा या राजद व तेजस्वी यादव के आधिकारिक सोशल एकाउंट से नीतीश कुमार पर कोई कटाक्ष करना बंद कर दिया गया था। यहाँ तक कि जहरीले शराब से बड़ी संख्या में लोगों की हुए मौत पर भी राजद मौन रहा व हमला केवल केंद्र पर करते रहा। भाजपा से लेकर राजनीतिक विशेषकों तक नीतीश के अगले कदम का आकलन नहीं कर सके।

राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है तिरंगा

स्वतंत्रता दिवस का त्यौहार आजादी का द्योतक है। भारत में वर्ष 2022 में 76वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा है। यह आजादी की 75वाँ वर्षगांठ है। स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे हो गए। 15 अगस्त 1947 को भारत में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। स्वतंत्रता दिवस 2022 की थीम/विषय है- हङ्गर घर तिरंगाह। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत शुरू किया गया एक अभियान हङ्गर घर तिरंगाह वर्ष 2022 के स्वतंत्रता दिवस को खास बनाता है। इस अभियान के तहत 13 अगस्त से 15 अगस्त तक देश भर में 20 करोड़ से अधिक घरों पर तिरंगा झङ्डा फहराया जाएगा। हर घर तिरंगा अभियान हमारे तिरंगे झङ्डे के प्रति सम्मान दिखाने के लिए है, जो हमारे राष्ट्र के लिए एक गौरव का प्रतीक है। ईंडियन फ्लैग कोड (फ्लैग कोड, 2002) के मुताबिक नेशनल फ्लैग तिरंगा को केवल दिन में ही फहराने की अनुमति थी। शाम होने के साथ ही इसे उतार लिया जाता था। वर्ष 2022 में केंद्र की मोदी सरकार ने हर घर तिरंगा अभियान के लिए फ्लैग कोड के नियमों में बदलाव किया है, जिसके मुताबिक अब दिन और रात दोनों में तिरंगा झङ्डा फहराया जा सकता है। इसके लिए 20 जुलाई, 2022 को भारतीय झङ्डा संहिता 2002 में संशोधन किया गया है। फ्लैग कोड में एक और बड़ी तब्दीली करते हुए सरकार ने पॉलिस्टर और मशीन के झङ्डों को भी मंजूरी दे दी है। इसके पहले केवल हाथ से बनाए गए कपास, ऊन और रेशमी खादी के झङ्डों को फहराने की अनुमति थी। तिरंगा फहराने को लेकर कुछ खास बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. किसी भी दूसरे झङ्डे को नेशनल फ्लैग से ऊचा या बराबर नहीं फहराया जाना चाहिए।

2. फटा हुआ या गंदा तिरंगा कभी न फहराएं और अगर फहराने के बाद भी यह फट जाए तो इसे उतार लेना चाहिए।

3. तिरंगे को हमेशा पूरे आदर और जोश के साथ फहराया जाता है और धीरे-धीरे उतारा जाता है। इसको कभी जपान पर स्पर्श नहीं करना चाहिए। तिरंगा, राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है। राष्ट्रीय ध्वज की सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग का अशोक चक्र स्थित होता है। अशोक चक्र की 24 तीलियों से ही मनुष्य के लिए बनाये गए 24 धर्म मार्ग की तुलना की गई है। इसलिए इन्हें मनुष्य के लिए बनाये गए 24 धर्म मार्ग भी कहा जाता है। इन 24 तीलियों का मतलब क्रमशः इस प्रकार है- संयम, आरोग्य, शांति, त्याग, शील, सेवा, क्षमा, प्रेम, मैत्री, बन्धुत्व, संगठन, कल्याण, समृद्धि, उद्योग, सुरक्षा, नियम, समता, अर्थ, नीति, न्याय, सहकार्य, कर्तव्य, अधिकार, बुद्धिमत्ता। किसी भी राष्ट्र का ध्वज उस राष्ट्र की अभिव्यक्ति का



आधार होता है। राष्ट्रीय ध्वज की परिकल्पना बिना राष्ट्र के संभव नहीं है। राष्ट्रीय ध्वज को समझना है तो पहले राष्ट्र को समझना होगा। राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र एक दूसरे के पूरक हैं। ह्याराष्ट्रलू शब्द अंग्रेजी के शब्द ह्यानेशनलू शब्द लैटिन भाषा के ह्यानेशीऊलू शब्द से लिया गया है। लैटिन में, ह्यानेशीऊलू शब्द का अर्थ जन्म या जाती है। राष्ट्र, भूमि का दुकड़ा नहीं होता है। राष्ट्र बहुत से लोगों का समूह होता है। वह समूह जिसमें सभी लोग एक केंद्र बिंदु को अपना मानकर आपस में एक जुड़ाव महसूस करते हैं। देश के बाहर रहने वाले लोगों का जुड़ाव यदि इस केंद्र बिंदु से है तो ये लोग भी राष्ट्र के दायरे में आएँगे। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया में कोई व्यक्ति चाहे किसी भी देश में रहता हो यदि वो किसी एक केंद्र बिंदु के आधार पर अपने लोगों से जुड़ाव महसूस करता है तो वो अपने राष्ट्र का हिस्सा है। केंद्र बिंदु धर्म के आधार पर जुड़ाव वाला हो सकता है। ऐतिहासिक आधार पर जुड़ाव वाला हो सकता है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर जुड़ाव वाला हो सकता है। भारतीय संस्कृति के आधार पर जुड़ाव वाला हो सकता है। भाषा भी केंद्र बिंदु के स्थान पर हो सकती है अर्थात् समान भाषा बोलने वाले लोग भी जुड़ाव का कारण हो सकते हैं। जब जनों का समूह एक केंद्र बिंदु को केंद्र में रखते हुए उसके आधार पर आपस में जुड़ाव महसूस करता है तो

उसे ही राष्ट्र कहा जाता है। राष्ट्र एक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, ऐतिहासिक या किसी भी अन्य केंद्र बिंदु के आधार पर स्थापित लोगों के बीच के सम्बन्ध से बने एक जनसमूह को कहा जाता है। इस तथ्य के साथ यह भी जरूरी है कि यहाँ पर जो केंद्र बिंदु है वह उन सभी लोगों को एकजुट रहने हेतु बाध्य करता हो। भारत एक राष्ट्र है। राष्ट्र एक भावनात्मक इकाई है। जो लोगों को उनके मन से जोड़ती है। भारत के लोग मनोवैज्ञानिक रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। उनके मन जुड़े हुए हैं। मन से जुड़े हुए लोग ही राष्ट्र का निर्माण करते हैं। राष्ट्र का दायरा असीमित होता है। राष्ट्र को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। राष्ट्र विशाल होता है। जबकि देश सीमाओं से बंधा होता है। अतएव देश का दायरा सीमित होता है। राष्ट्र जीवंत इकाई है। राष्ट्र सार्वभौमिक है। जबकि देश एक भौगोलिक इकाई है। राष्ट्रीय चेतना का जन्म अक्षुण्ण एकता से ही होता है। राष्ट्रीय चेतना ही राष्ट्र की अभिव्यक्ति का आधार है। अक्षुण्ण एकता की मिसाल है तिरंगा। तिरंगा जनसमूहों को एक धारे में पिरोए रहता है। तिरंगा एकता एवं अखंडता का प्रतीक है। एकता एवं अखंडता से राष्ट्रीय चेतना का जन्म होता है। अतएव हम कह सकते हैं कि तिरंगा राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। आजादी के अमृत महोत्सव में ह्याल्हर घर तिरंगाहल्ल अक्षुण्ण एकता की मिसाल है।

अमृतकाल और युवा भारत की चुनौतियां

हिन्दुस्तान अपनी आजादी के 75वें वर्ष का उत्सव मना रहा है। साल के हिसाब से देखें तो 75वां वर्ष उप्रदेश होने का संदेश देता है लेकिन जब हिन्दुस्तान की बात करते हैं तो यह यौवन का चरम है। यह इसलिये भी कि वर्तमान हिन्दुस्तान युवाओं का है और आज अमृतकाल में युवा भारत चौतरफा चुनौतियों से घिरा हुआ है। चुनौतियों के साथ संभावनाओं के दरवाजे हमेशा से खुले रहे हैं और यह भारतीयत की पंजी है। जब दुनिया चुनौतियों से टूटकर बिखर जाती है तब भारत अपने नवनिर्माण में जुट जाता है। आज की काल परिस्थिति भी इसी बात का संदेश देती है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भारत का युवा समाज आज बेरोजगारी, अशिक्षा, महंगाई के साथ दिशाप्रभ्रम में अपना भविष्य तय कर रहा है। उसके पास अनेक विकल्प हैं लेकिन उसे भ्रमित किया जा रहा है। ऐसे में चुनौतियां हमेशा पहाड़ की तरह खड़ी हो रही हैं। आखिर कौन सी चुनौती है जो युवाओं को दिग्गजभ्रमित कर रही है? इस पर खुलेमन से चर्चा करने की जरूरत है।

जब हम युवा भारत की चर्चा करते हैं तो हमारे समक्ष करीब करीब साल 2000 में इस दुनिया में आये उन बच्चों को सामने रखते हैं जो इस समय 20-22 वर्ष के हैं। इनके जन्म के आरंभिक पांच वर्ष छोड़ दिया जाए तो जो इनके पास करीब 15 वर्ष बचते हैं, वह अज्ञानता के वर्ष हैं। यह कोरी बात नहीं है बल्कि इस दौर में मोबाइल ने उनकी गहरे ज्ञान की दुनिया को अंधकार में बदल दिया है। देश और समाज को लेकर अपनी अपनी तरह से परिभाषा मोबाइल पर गढ़ी जा रही है। एक सुनियोजित ढंग से युवाओं को इतिहास से परे कर दिया गया। कुछ सच और कुछ झूठ को ऐसे बताया और दिखाया जा रहा है कि बीते दशकों में एक शून्य था। उम्र का यह दौर नाजुक होने के साथ-साथ समझ का कच्चा भी होता है। यह दौर इसलिये भी खतरनाक है कि समाज में सामूहिक परिवार का तेजी से विघटन हुआ और एकल परिवार ने स्थान बनाया है। राष्ट्र, इतिहास, संस्कृति, धर्म, समाज और जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाने वाले दादा-दादी और नाना-नानी किसी वृद्धाश्रम में जीवन बीता रहे हैं। मां-बाप पैसे कमाने की मशीन हो गये हैं और एक या दो बच्चे वाले परिवार का ज्ञानालय मोबाइल बन चुका है। अधकचरा ज्ञान और दिशाप्रभ्रम ने युवाओं का आत्मविश्वास को धक्का पहुंचाया है।

अमृतकाल में जब इस विषय पर चर्चा करें तो बेहद सावधानी बरतने की जरूरत होती है। बुजुर्गों के वृद्धाश्रम जाने के बाद स्कूलों से नैतिक शिक्षा का पाठ



विलोपित कर दिया गया है। इधर की सत्ता-शासन हो या उधर की सत्ता-शासन किसी ने इस बात की चिंता नहीं की है। सिनेमा एक पाठशाला हुआ करती थी तो वह भी अब वैसा जिम्मेदार नहीं रहा। सामाजिक सरोकार की फिल्में कब से उतर चुकी हैं। पत्रकारिता की चर्चा करें तो खुद में अफसोस होता है कि क्या यह वही पत्रकारिता है जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़ो के लिए मजबूर कर दिया था या स्वतंत्र भारत में आपातकाल जैसे कलंक के सामने पहाड़ बनकर खड़ा हो गया था? आज क्या हो गया है? दरअसल, मिशनरी पत्रकारिता ने व्यवसाय को ध्येय बना लिया है और जब अखबारों में हर सूचना दी जाती है कि उसके प्रकाशन का लाभ-

हानि का आंकड़ा यह रहा तो बच्ची-खुची उम्मीद भी तिरोहित हो जाती है। यह अमृतकाल के हिन्दुस्तान का सच है। यह सच एक चुनौती बनकर हमारे सामने खड़ा है। 15 अगस्त 1947 से लेकर अमृतकाल तक राजनीति में पिरावट को मापने का पैमाना नहीं बचा लेकिन यह भारत की मिट्टी की ताकत है कि वह हर बार पूरी ताकत के साथ खड़ा हो जाता है। बहुत पौछे ना भी जायें तो पिछले तीन दशकों में चुनावी राजनीति ने मुफ्तखोरी का ऐसा मीठा जहर समाज में बोया है कि आज खुद राजनीतिक दलों को मुफ्तखोरी के खिलाफ खड़े होना पड़ रहा है। मुफ्तखोरी से युवा समाज निष्क्रिय हुआ है और जो जितना ज्यादा मुफ्त में देता है, वह

सरकार, वह नेता उनका आइडियल बन जाता है। दुर्भाग्य है कि जब स्वयं प्रधानमंत्री मुफतखोरी के खिलाफ बोलते हैं तो कुतर्क के साथ उनका विरोध शुरू हो जाता है। इस मोबाइल ने विरोध करना तो सीखा दिया है लेकिन उसके पास तर्क नहीं है। वह केवल विरोध के लिए विरोध करना जानता है। कोई भी सता और शासन इस देश की जनता का विश्वास जीते बिना नहीं रह सकती है। तब ऐसे में यह कहना या कल्पना करना कि सरकार जनविरोधी है, खुद का विरोध करना है।

शिक्षा के स्तर को लेकर हम बेखबर हैं। ऐसा क्या हो गया है कि उच्च शिक्षा पा रहे विद्यार्थी कभी हताशा में तो कभी डर में तो कभी किसी अन्य कारण से आत्महत्या कर रहे हैं। आत्महत्या का यह ग्राफ निरंतर बढ़ रहा है जो डरावना है और शिक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाता है कि अधिकर उस विद्यार्थी की हताशा, डर को शिक्षक व्यापारों नहीं समझ पा रहे हैं? क्यों उसका समय पर निदान कर उसके भीतर आत्मविश्वास नहीं जगा पा रहे हैं। सच तो यह है कि हम सब जवाबदारी लेने के बजाय नौकरी कर रहे हैं। एक समय था जब बच्चा गलती करता तो मास्साब से स्कूल में पिटाई खाता और घर पर शिकायत करता तो पिता से। तब बच्चों में कोई हताशा-निराशा या डर नहीं था क्योंकि उसे बेहतर करने के लिए प्रेरित किया जाता था। एक समय था जब मास्साब के कुटने पर कोई शिकायत नहीं होती थी लेकिन आज मामूली सजा पर मां-बाप खड़े हो जाते हैं। यहीं से बुनियाद कमजोर होती है। कुछ अपवादस्वरूप घटनाओं को छोड़ दें जिनका समर्थन नहीं किया जा सकता है लेकिन हमें पुराने दौर में लौटने की जरूरत होगी। एक बड़ा रोग पब्लिक शिक्षण संस्थाओं का है। यहां आर्थिक रूप से सम्पन्न बच्चों और स्टेटस मेंटेन करने के लिए अपने खर्चों में कटौती कर भेजे गये मध्यमवर्गीय बच्चों के बीच एक प्रतिस्पर्धा होती है। ऐसे में मन में कुंठा और हताशा स्वाभाविक है। यहीं से आत्मविश्वास कमजोर होता है और कुछ बच्चे आत्महत्या जैसे भीरु रास्ता अपना लेते हैं तो कुछ बच्चे अपराधिक प्रवृत्तियों की ओर उम्मुक्ष हो जाते हैं। क्या कारण है कि अनेक कोशिशों के बाद भी शासकीय शिक्षण संस्थाओं में सीटें रिक्त रह जाती हैं और निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश मिलना मुश्किल हो जाता है। इस बात को समझने की जरूरत है। अमृतकाल के इस सच से मुहूर्मोड़ा मुश्किल है और जरूरी यह हो गया है कि हम सरकारी संस्थाओं को अपना बनायें, उन पर विश्वास करें और यही हमारी नींव को मजबूत करेंगे।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और दो-तीन दशक बाद शिक्षा नीति में परिवर्तन किया जाता है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए। एनईपी में स्वरोजगार के अवसर और मातृभाषा का समावेश किया गया है जो वर्तमान समय की जरूरत है। और भी जो प्रावधान किया गया है, उसमें अनेक पक्ष स्वागत के योग्य है किन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के पैरोकार इस बात से आत्ममुग्ध हैं कि यही सबकुछ है। शायद यह सच हो लेकिन एक सच यह भी है कि हम आप उसी शिक्षानीति से आये हैं जिसमें संशोधन-परिमार्जन करने लायक बनाया है। पाठ्यक्रम में जो परिमार्जन किया जाना चाहिए, वह हो लेकिन जरूरी है कि युवा भारत में यह दृष्टिसम्पन्न हो। शिक्षा विकास की बुनियाद है। हम इस बात को वर्षों से पढ़ते आ रहे हैं कि मैकाले ने कहा था कि भारत को गुलाम बनाये रखना है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर दो। आज इस स्थिति को बदला जा रहा है तो स्वागत है।



परिवर्तन प्रकृति का नियम है और दो-तीन दशक बाद शिक्षा नीति में परिवर्तन किया जाता है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए। एनईपी में स्वरोजगार के अवसर और मातृभाषा का समावेश किया गया है जो वर्तमान समय की जरूरत है। और भी जो प्रावधान किया गया है, उसमें अनेक पक्ष स्वागत के योग्य है किन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के पैरोकार इस बात से आत्ममुग्ध हैं कि यही सबकुछ है। शायद यह सच हो लेकिन एक सच यह भी है कि हम आप उसी शिक्षानीति से आये हैं जिसमें संशोधन-परिमार्जन करने लायक बनाया है। पाठ्यक्रम में जो परिमार्जन किया जाना चाहिए, वह हो लेकिन जरूरी है कि युवा भारत में यह दृष्टिसम्पन्न हो। शिक्षा विकास की बुनियाद है। हम इस बात को वर्षों से पढ़ते आ रहे हैं कि मैकाले ने कहा था कि भारत को गुलाम बनाये रखना है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर दो। आज इस स्थिति को बदला जा रहा है तो स्वागत है।

कि भारत को गुलाम बनाये रखना है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर दो। आज इस स्थिति को बदला जा रहा है तो स्वागत है। समाज की बुनियादी जरूरतें यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, पानी, सुक्ष्मा आदि-इत्यादि राज्य की जवाबदारी होती है और यही जवाबदारी निजी हाथों में जाती है तो यह जवाबदारी ना होकर नफा-नुकसान के तराजू में तौला जाता है जो समाज के विकास में बाधक बनता है। इसलिये अमृतकाल में इस बात का संकल्प लेना होगा कि राज्य अपनी जवाबदारी अपने कंधों पर लेगी।

अमृतकाल में युवा भारत की चुनौतियां अपार हैं। लोक और नैतिक शिक्षा की नींव को मजबूत कर ही हम इसे सार्थक बना सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत की कल्पना तब साकार होगी जब हर युवा के पास रोजगार होगा ना कि मुफ्त की सुविधायें। शहर गांव तक ना पहुंचे बल्कि गांव शहर तक आये तो आत्मनिर्भर भारत की मजबूत तस्वीर नुमाया होगी। मूलतानी मिट्टी शहर तक आये लेकिन शहर का एक स्पष्ट वाला पातच गांवों तक पहुंच कर उनकी आर्थिक क्षमता को प्रभावित करे, इसे रोकना होगा। मितव्यविता का सबसे अहम सूत्र है संतोष और खादी इसका संदेश है। हालांकि आज महांगी होती खादी के मायने बदल गये हैं लेकिन आज भी एक आस, एक उमरीद बाकि है कि हम हथकरघा उद्योग को जिंदा करें और बाजार के पहले समाज उसे पहने और आगे बढ़ाये। अमृतकाल केवल उत्सव का विषय नहीं है बल्कि यह संकल्प का विषय है कि भारत कैसे विश्व गुरु बने, कैसे आर्थिक रूप से महाशक्ति बने और कैसे युवा भारत दुनिया के सामने नजीर बने।

श्रीकृष्ण सच्चे अर्थों में राष्ट्रनायक हैं

भगवान् श्रीकृष्ण हमारी संस्कृति के एक अद्भुत एवं विलक्षण राष्ट्रनायक हैं। श्रीकृष्ण का चरित्र एक लोकनायक का चरित्र है। वह द्वारिका के शासक भी है किंतु कभी उन्हें राजा श्रीकृष्ण के रूप में संबोधित नहीं किया जाता। वह तो ब्रजनंदन है। समाज एवं राष्ट्र व्यवस्था उनके लिये कर्तव्य थी, इसलिये कर्तव्य से कभी पलायन नहीं किया तो धर्म उनकी आत्मनिष्ठा बना, इसलिये उसे कभी नकारा नहीं। वे प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों की संयोजना में सचेतन बने रहे। श्रीकृष्ण के आदर्शों से ही देश एवं दुनिया में शांति स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त होगा। इस रहस्य को समझना होगा कि श्रीकृष्ण किस प्रकार आदर्श राजनीति, व्यावहारिक लोकतंत्र, सामाजिक समरसता, एकात्म मानववाद और अनुशश्वरता से उत्तम राष्ट्रनायक होता है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए किस तरह की नीति और नियत चाहिए- इन सब प्रश्नों के उत्तर श्रीकृष्ण के जीवन से मिलते हैं।

श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पर्याय है। उनके आदर्शों के माध्यम से ही विश्व ने भारत को जाना है। उनके आदर्शों की पुनर्प्रतिष्ठा से विश्व फिर से भारत को जानेगा। राजनैतिक सूक्ष्म दृष्टि, दुष्टों, राष्ट्रद्रोहियों, अपराधियों एवं भ्रष्टाचारियों का दलन, वचन पालन का संकल्प, राष्ट्रहितार्थ आत्मसमर्पण का व्रत, निष्पाप लोगों की मुक्ति, विषमताओं का उन्मूलन, विभेदों में सामंजस्य, परस्पर शत्रुता का निवारण, स्वयं स्वीकृत आत्मसंयम, राष्ट्र कार्यों में सबका सहयोग, राजसत्ता पर धर्मसत्ता का अंकुश और इन सबकी पूर्ति के लिए सत्ता का भी त्याग इत्यादि श्रीकृष्ण के गुण भारत के राष्ट्रीय जीवन एवं सांस्कृतिक मूल्य हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण उस कोटि के चिंतक थे, जो काल की सीमा को पार कर शाश्वत और असीम तक पहुंचता है। जब-जब अनीति बढ़ जाती है, तब-तब श्रीकृष्ण जैसे राष्ट्रनायक को अवतीर्ण होना पड़ता है। जैसा कि स्वयं श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है- यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः; अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजायहम् अर्थात् अन्याय के प्रतिकार के लिए ही राष्ट्रनायक को जन्म लेने की आवश्यकता पड़ती है।

जो समूचे जनमानस को इस तरह चेतना से उद्भेदित कर दे कि जिस अभीष्ट दिशा में वह समूचे समाज को ले जाना चाहता है, उस दिशा में सैलाब की तरह समूचा समाज चल पड़े और उसके प्रबल प्रवाह को उन्नत पर्वत शिखर भी न रोक सके। श्रीकृष्ण भी ऐसे ही राष्ट्रनायक थे, जिनके इंगित मात्र पर सभी गोप-गोपियां ब्रज छोड़कर तत्कालीन नरेश के विरुद्ध एकजुट हो गए थे। मध्यकाल में गोस्वामी तुलसीदास हालांकि सत्ता से कोसों दूर थे, लेकिन उनकी रामचरितमानस आज भी जन-जन की कंठहार बनी हुई है और आज भी किसी भी सत्तासीन राजा-महाराजा या सम्राट की अपेक्षा भारत में अधिकांश भागों में तुलसी का नाम गूंज रहा है। इसी प्रकार हाल में महात्मा गांधी सत्ता से



बिल्कुल दूर थे। उन्होंने एक बार भी कांग्रेस का अध्यक्ष पद नहीं संभाला। लेकिन अपने जीवनकाल में उन्होंने कांग्रेस को तथा तत्कालीन समाज को और समूचे राष्ट्र को दिशा दी थी। जयप्रकाश नारायण ने देश में संपूर्ण क्रांति का आङ्गन करके सत्ता परिवर्तन कर दिया था। इसलिये नहीं कि वे सत्ता में थे, बल्कि उनके पास

लोकसत्ता थी और इसीलिये वे हालोकनायक हुए। लोगों का उन्होंने अगाध विश्वास जीता था। आज का दुनिया का सबसे बड़ा संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उसके संघ-संचालक श्री मोहन भागवत भी ऐसे ही लोकनायक हैं। लोकनायक या जननायक ही वास्तव में राष्ट्रनायक होता है। श्रीकृष्ण अपने युग के

ऐसे ही नायक थे। उस समय विश्वभर के सत्ताधारी उनके इर्द-गिर्द ऐसे मंडराते थे, मानो उनके चतुर्दिक चक्र का बलय हो। श्रीकृष्ण ने अन्य लोगों को सत्ता सौंपी, लेकिन स्वयं सत्ता से विरक्त रहे। वास्तव में श्रीकृष्ण राष्ट्रनायक इसीलिए बन सके, क्योंकि उन्होंने लोकशक्ति को संगठित करने की महती भूमिका निर्भाइ थी।

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व नेतृत्व की समस्त विशेषताओं को समेटे बहुआयामी एवं बहुरंगी है, यानी राजनीतिक कौशल, बुद्धिमत्ता, चातुर्य, युद्धनीति, आकर्षण, प्रेमधारा, गुरुत्व, सुख, दुख और न जाने और क्या? एक देश-भक्त के लिए श्रीकृष्ण भगवान तो हैं ही, साथ में वे जीवन जीने की कला एवं सफल नारिकता भी सिखाते हैं। उन्होंने अपने व्यक्तित्व की विविध विशेषताओं से भारतीय-संस्कृति में महानायक का पद प्राप्त किया। एक और वे राजनीति के ज्ञाता, तो दूसरी और दर्शन के प्रकांड पंडित थे। धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जगत में भी नेतृत्व करते हुए ज्ञान-कर्म-भक्ति का समन्वयवादी धर्म उन्होंने प्रवर्तित किया। अपनी योग्यताओं के आधार पर वे युगपुरुष थे, जो आगे चलकर युवावतार के रूप में स्वीकृत हुए। उन्हें हम एक महान् क्रांतिकारी नायक के रूप में स्मरण करते हैं। वे दार्शनिक, चिंतक, गीता के माध्यम से कर्म और सांख्य योग के सदेशवाहक और महाभारत युद्ध के नीति निर्देशक थे किंतु सरल-निश्चल ब्रजवासियों के लिए तो वह रास रचैया, माखन चोर, गोपियों की मटकी फोड़ने वाले नटखट कहैया और गोपियों के चित्तवोर थे। गीता में इसी की भावाभिव्यक्ति है- हे अर्जुन! जो भक्त मुझे जिस भावना से भजता है मैं भी उसको उसी प्रकार से भजता हूँ। हमारे प्रथानमंत्री नरेन्द्र मोदी में भी हम इन्हीं विशेषताओं का दर्शन करते हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण के जीवन-आदर्शों को आत्मसात करते हुए वे सशक्त भारत-नया भारत निर्मित कर रहे हैं।

श्रीकृष्ण के जीवन में विभिन्न प्रकार के गुणों का ऐसा सुंदर समन्वय था कि एक और जहां वे सामान्यजन में रम सकते थे, वहीं अपने हाथों से कुबलयापीड़ जैसे मदोन्मत्त हाथी के दांतों को भी उखाड़कर फेंक सकते थे। अद्भुत क्षमता का यह समन्वय श्रीकृष्ण को अन्य नायकों से बिल्कुल भिन्न पक्षि में लाकर खड़ा कर देता है। वैचारिक और व्यावहारिक धरातल को समाविष्ट करने की श्रीकृष्ण की सार्थकता की जो धारा भारतीय समाज में अविछिन्न रूप से प्रवाहित हुई उसी को चाणक्य ने कूटनीति से, तुलसीदास ने भक्ति से, गांधी ने सेवा से, जयप्रकाश ने जनजागरण के माध्यम से, मोहन भागवत ने संगठन से चिंतन की व्यावहारिक उपयोगिता को सिद्ध कर दिखाया। श्रीराम सत्तासीन रहते हुए भी सदैव उससे उसी प्रकार निर्लिपि रहे, जैसे अहर्निश जल में रहते हुए भी कमल पत्र उससे लिस नहीं होता। श्रीराम की इसी परम्परा को श्रीकृष्ण ने और आगे बढ़ाया। श्रीराम तो अपने जीवन में कुछ समय सत्ता पर आसीन भी रहे, लेकिन श्रीकृष्ण हमेशा सत्ता से दूर रहे। उन्होंने अन्य लोगों को तो सत्ता पर बिठाया, लेकिन स्वयं आराधना करते रहे। उनकी विनप्रता इस सीमा तक थी कि राजसूय यज्ञ में जब सभी को काम सौंपा गया तो श्रीकृष्ण ने लोगों को झूटी पत्तलें उठाने का जिम्मा खुद ले लिया। यह थी उनकी विनप्रता। इसी विनप्रता का परिणाम रहा कि सभी नरेशों के मुकुटमणि उनके चरणों



पर अवनत होते रहे। उनके इन्हीं गुणों की वजह से आज भी हम उन्हें घोड़का कलापूर्ण व्यक्ति मानते हैं। संपूर्ण भारत में प्राचीनकाल से अवार्चीन काल तक किसी अन्य व्यक्ति को यह सम्मान प्राप्त नहीं हो सका।

सत्ता से जो व्यक्ति दूर रहता है और दूर रहते हुए भी समूचे राष्ट्र को दिशा देता है, वही सच्चा राष्ट्रनायक होता है। राष्ट्रनायक का जीवन त्यागमय होता है। उसके जीवन में पदालिपा नहीं होती। भगवान् श्रीराम को उनके पिता दशरथ ने सिंहासन सौंपा था। उस सिंहासन पर वे बने रह सकते थे। लेकिन वे सत्ता से अनासक्त थे। श्रीकृष्ण भी उसी परम्परा से जुड़ते हैं। उनके अंदर तीन गुण विशेष रूप से विद्यमान थे- त्याग, सत्ता से अनासक्ति तथा लोकशक्ति को संगठित करने की अद्भुत क्षमता। इन तीनों गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण ने अपनी इच्छानुसार युग परिवर्तन लाने में सफलता प्राप्त की। श्रीकृष्ण का वैचारिक धरातल व्यावहारिक धरातल से बहुत ऊँचा था। तथापि वे अपने वैचारिक और व्यावहारिक धरातल के बीच समन्वय इस तरह करते थे कि दोनों धाराएं एक-दूसरे में कहां बिलीन होती हैं, उसका पता भी नहीं चलता।

श्रीकृष्ण का राष्ट्रनायक का चरित्र अत्यन्त दिव्य है। हर कोई उनकी ओर खिंचा चला जाता है। जो सबको अपनी ओर आकर्षित करे, भक्ति का मार्ग प्रशस्त करे, भक्तों के पाप दूर करे, वही श्रीकृष्ण है। वह एक ऐसा आदर्श चरित्र है जो अर्जुन की मानसिक व्यथा का निदान करते समय एक मनोवैज्ञानिक, कंस जैसे असुर का संहार करते हुए एक धर्मावतार, स्वार्थ पोषित राजनीति का प्रतिकार करते हुए एक आदर्श राजनीतिज्ञ, विश्व मोहिनी बसी बजैया के रूप में सर्वश्रेष्ठ सर्गीतज्ञ, ब्रजवासियों के समक्ष प्रेमावतार, सुदामा के समक्ष एक आदर्श मित्र, सुर्दर्शन चक्रधारी के रूप में एक योद्धा व सामाजिक क्रांति के प्रणेता हैं। उनके जीवन की छोटी से छोटी घटना से यह सिद्ध होता है कि वे सर्वैश्वर्य सम्पन्न थे। धर्म की साक्षात् मूर्ति थे। कुशल राजनीतिज्ञ

थे। श्रीकृष्ण का प्रशासनिक एवं राजनीतिक चरित्र अत्यन्त अलौकिक है, उनके समग्र विचार दर्शन का संक्षेप में केवल एक संदेश है- कर्म। कर्म के माध्यम से ही समाज की अनिष्टकारी प्रवृत्तियों का शमन करके उनके स्थान पर वरेण्य प्रवृत्तियों को स्थापित करना संभव होता है। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व असीम करुणा से परिपूर्ण है। लेकिन अनीति और अत्याचार का प्रतिकार करने वाला उनसे कठोर व्यक्ति शायद ही कोई मिले। जो श्रीकृष्ण अपने से प्रेम करने वाले के लिए नंगे पांव दौड़े चले जाते थे, वही श्रीकृष्ण दुष्टों को दण्ड देने के लिए अत्यंत कठोर और निर्मम भी हो जाते थे। गीता का उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही कहा था कि मोह वश होकर रहने का कोई लाभ नहीं। ये सगे संबंधी सब कहने को हैं, लेकिन तुम्हें अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति के प्रतिपादन पर बल देना है। श्रीकृष्ण के विषय में अनेक किंवदन्तियां और मिथक प्रचलित हैं। लेकिन समकालीन संदर्भ में उनका उचित और युक्तिसंगत ऐतिहासिक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

श्रीकृष्ण ग्रामीण संस्कृति के पोषक बने हैं। उन्होंने अपने समय में गायों को अभूतपूर्व सम्मान दिया। वे गायों एवं ग्वालों के स्वास्थ्य, उनके खान-पान को लेकर सजग थे। उन्होंने जहां ग्वालों की मेहनत से निकाला गया माखन और दूध-दही को स्वास्थ्य रक्षक के रूप में प्रतिष्ठित किया वही इन अमूल्य चीजों को हाकरह के रूप में कंस को देने से रोका। वे चाहते थे कि इन चीजों का उपभोग गांवों में ही हो। श्रीकृष्ण का माखनचोर वाला रूप दरअसल निरंकुश सत्ता को सीधे चुनौती तो था ही, लेकिन साथ ही साथ ग्रामीण संस्कृति को प्रोत्साहन देना भी था। श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव-जन्माष्टमी पर आज भारत का निर्माण उनकी शिक्षाओं, जीवन-आदर्शों एवं सिद्धान्तों पर करने की अपेक्षा है, तभी हिन्दू सशक्त होंगे, तभी भारत सही अर्थों में हिन्दू राष्ट्र बन सकेगा।

इंडीजेनस डे का खंडन करता है हमारे बिरसा मुंडा का उलगुलान



मूलनिवासी दिवस या इंडिजिनस पीपल डे एक भारत में एक नया षड्यंत्र है। सबसे बड़ी बात यह कि इस षड्यंत्र को जिस जनजातीय समाज के विरुद्ध किया जा रहा है, उसी जनजातीय समाज के कांथे पर इसकी शोभायामान पालकी भी चतुराई पूर्वक निकाली जा रही है। वस्तुतः प्रतिवर्ष इस दिन यूरोपियन्स और पोप को आठ करोड़ मूल निवासियों का निर्मम नरसंहार करने के लिए क्षमा मांगनी चाहिए। यह दिन यूरोपियन्स के लिए पश्चातप व क्षमा का दिन है। यह दिन चतुर गोरे ईसाई व्यापारियों द्वारा भोलेभाले जनजातीय समाज को मार काट करके उनकी भूमि छीन लिए जाने का शर्मनाक दिन है। यूरोपियन्स ने इस दिन को षड्यंत्रपूर्वक उत्सव का दिन बना दिया और आश्वर्य यह कि भारत का बनवासी समाज भी इस कुचक्र में फंस गया है। संयुक्त

राष्ट्र संघ के एक संगठन विश्व मजदूर संगठन कछड द्वारा हराइट्स आफ इंडिजिनस पीपलह नाम से एक कवेनेशन जारी किया गया जिसे सम्पूर्ण विश्व के मात्र 22 उन देशों ने हस्ताक्षर किया जिनकी कहीं कहीं अत्याचार पूर्ण औपनिवेशिक कालोनियां थीं। इन्हीं 22 देशों ने एक हवार्किंग ग्रूप फर इंडिजिनस पीपलह नामक संगठन बनाया जिसकी प्रथम बैठक 9 अगस्त 1982 को हुई और इसी दिन को बाद मे विश्व मूल निवासी दिवस या विश्व आदिवासी दिवस के रूप मे मनाया जाने लगा। भारत के तथाकथित सेकुलर बुद्धिजीवियों व वामपर्थियों के सहयोग से विदेशियों की यह चाल इतनी सफल हुई कि बड़ी संख्या मे जनजातीय समाज इस वर्ल्ड इंडिजिनस डे यानि विश्व मूलनिवासी दिवस को आदिवासी दिवस के नाम से मनाने लगा।

तथ्य यह है कि भारत मे जनजातीय समाज व अन्य जाति जिसे इन विघटनकारियों ने आर्य झू अनार्य का विरंडा बना दिया, वैसी परिस्थितियाँ भारत मे हैं ही नहीं। कथित तौर पर आर्य कहे जाने वाले लोग भी भारत मे उतने ही प्राचीन हैं जितने कि जनजातीय समाज के लोग।

यह सर्वविदित है कि इस्लाम व ईसाईयत दोनों विस्तारवादी धर्म हैं। अपने विस्तार हेतु इन्होने अपने धर्म के परिष्कार, परिशोधन के स्थान पर षड्यंत्र, कुतर्क, कुचक्र व हिंसा का ही उपयोग किया है। अपने इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु पश्चिमी विद्वानों ने भारतीय जातियों मे विभेद उत्पन्न करना उत्पन्न किया व द्विवड़ों को भारत का मूलनिवासी व आर्यों को बाहरी आक्रमणकारी कहना प्रारंभ किया। सच यह है कि भारत में उदित हुए

प्रत्येक धर्म के मानने वाले सभी लोग मूलतः भारत के आदिवासी ही हैं। मूल भारतीयों में वनों में रहने व नगर में रहने मात्र का ही भेद है।

ईसाइयों ने अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने हेतु पष्टयन्त्र रचना सतत चालू रखे। विदेशियों ने ही भारत के इतिहास लेखन में इस बात को दुराशयपूर्वक बोया कि आर्य विदेश से आई हुई एक जाति थी जिसने भारत के मूलनिवासी द्रविड़ समाज की सभ्यता को आक्रमण करके पहले नष्ट भ्रष्ट किया व उन्हे अपना गुलाम बनाया। जबकि यथार्थ है कि आर्य किसी जाति का नहीं बल्कि एक उपाधि का नाम था जो कि किसी विशिष्ट व्यक्ति को उसकी विशिष्ट योग्यताओं, अध्ययन या सिद्ध हेतु प्रदान की जाती थी। आर्य शब्द का सामाय अर्थ होता है विशेष। पहले अंग्रेजों ने व स्वातंत्र्योत्तर काल में अंग्रेजों द्वारा लादी गई शिक्षा पद्धति ने भारत में लगभग छः दशकों तक इसी दूषित, अशुद्ध व दुराशयपूर्ण इतिहास का पठन पाठन चालू रखा।

भारत में इसी दूषित शिक्षा पद्धति ने आर्यन इंवेजन थ्योरी की स्थापना की व सामाजिक विभेद के बीज लगातार बोये। जर्मनी में जन्में किंतु संस्कृत के ज्ञान के कारण अंग्रेजों द्वारा भारत बुलाये गए मेक्समूलर ने आर्यन इंवेजन थ्योरी का अविष्कार किया। मेक्समूलर ने लिखा कि आर्य एक सुसंस्कृत, शिक्षित, बड़े विस्तृत धर्म ग्रन्थों वाली, स्वयं की लिपि व भाषा वाली घुमंतू किंतु समृद्ध जाति थी। इस प्रकार मैक्समूलर ने आर्य इंवेजन थ्योरी के सफेद झूट का पौधा भारत में बोया जिसे बाद में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने एक बड़ा वृक्ष बना दिया। यद्दि बाद मे 1921 मे हडप्पा व मोहनजोदाड़ो सभ्यता मिलने के बाद आर्यन थ्योरी को बड़ा धक्का लगा किंतु अंग्रेजों ने अपनी शिक्षा पद्धति, झूटे इतिहास लेखन व पष्टयन्त्र के बल पर इस थ्योरी को जीवित रखा। सिंधु घाटी सभ्यता की श्रेष्ठता को छुपाने व आर्य द्रविड़ के मध्य विभाजन रेखा खींचने की यह कथा बहुत विस्तृत चली। भारत के जनजातीय समाज व अन्य समाजों यानि अरण्यक समाज व नगरीय समाज मे एकरूपता की बात करें तो कई अकाट्य तथ्य सामने आते हैं। कथित तौर पर जिन्हे आर्य व द्रविड़ अलग अलग बताया गया उन दोनों का डीएनए एक है। दोनों ही शिव के उपासक हैं। प्रसिद्ध एन्थोपोलोजिस्ट वारियर एलविन, जो कि अंग्रेजों के एडवाइजर थे, ने जनजातीय समाज पर किए अध्ययन मे बताया था कि ये कथित आर्य और द्रविड़ शैविज्म के ही एक भाग है और गोंडवाना के आराध्य शंभूशेक भगवान शंकर का ही रूप है। माता शबरी, निषादाराज, सुग्रीव, अंगद, सुपेधा, जांबवंत, जटायु आदि आदि सभी जनजातीय बंधु भारत के शेष समाज के संग वैसे ही समरस थे जैसे दूध मे शक्कर समरस होती है। प्रमुख जनजाति गोंड व कोरकू भाषा का शब्द जोहारी रामचरितमानस के दोहा संख्या 320 मे भी प्रयोग हुआ है। मेवाड़ में किया जाने वाला लोक नृत्य गवरी व वोरी भगवान शिव की देन है जो कि समूचे मेवाड़ी हिंदू समाज व जनजातीय समाज दोनों के द्वारा किया जाता है। बिरसा मुंडा, टट्या भील, रानी दुर्गावती, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, अमर शहीद बुधु भगत, जतरा भगत, लाखो बोदरा, तेलंगा खड़िया, सरदार विष्णु गोंड आदि आदि कितने ही ऐसे वीर जनजातीय बंधुओं के नाम हैं जिनने अपना सर्वस्व भारत देश की संस्कृति व हिंदुत्व की रक्षा के लिये



भारत मे इसी दूषित शिक्षा पद्धति ने आर्यन इंवेजन थ्योरी की रथापना की व सामाजिक विभेद के बीज लगातार बोये। जर्मनी मे जन्में किंतु संस्कृत के ज्ञान के कारण अंग्रेजों द्वारा भारत बुलाये गए मेक्समूलर ने आर्यन इंवेजन थ्योरी का अविष्कार किया। मेक्समूलर ने लिखा कि आर्य एक सुसंस्कृत, शिक्षित, बड़े विस्तृत धर्म ग्रन्थों वाली, स्वयं की लिपि व भाषा वाली घुमंतू किंतु समृद्ध जाति थी। इस प्रकार मैक्समूलर ने आर्य इंवेजन थ्योरी के सफेद झूट का पौधा भारत मे बोया जिसे बाद में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने एक बड़ा वृक्ष बना दिया। यद्दि बाद मे 1921 मे हडप्पा व मोहनजोदाड़ो सभ्यता मिलने के बाद आर्यन थ्योरी को बड़ा धक्का लगा किंतु अंग्रेजों ने अपनी शिक्षा पद्धति, झूटे इतिहास लेखन व पष्टयन्त्र के मध्य विभाजन रेखा खींचने की यह कथा बहुत विस्तृत चली। भारत के जनजातीय समाज व अन्य समाजों यानि अरण्यक समाज व नगरीय समाज मे एकरूपता की बात करें तो कई अकाट्य तथ्य सामने आते हैं।

अर्पण कर दिया।

जब गजनी से विदेशी आक्रांता हिंदू आराध्य सोमनाथ पर आक्रमण कर रहा था तब अजमेर, नाडोल, सिद्ध पुर पाटन, और सोमनाथ के समूचे प्रभास क्षेत्र में हिंदू धर्म रक्षार्थ जनजातीय समाज ने एक व्यापक संघर्ष खड़ा कर दिया था। गौपालन व गौ सरक्षण का सदेश बिरसा मुंडा जी ने भी समान रूप से दिया है। और तो आर ऋतिसूर्य बिरसा मुंडा का हृतलगुलानह संपूर्णतः हिंदुत्व आधारित ही है। ईश्वर यानी सिंगबोगा एक है, गौ की सेवा करो एवं समस्त प्राणियों के प्रति दया भाव रखो, अपने घर में तुलसी का पौधा लगाओ, ईसाइयों के मोह जाल में मत फँसो, परधर्म से अच्छा स्वधर्म है, अपनी संस्कृति, धर्म और पूर्वजों के प्रति अटूट श्रद्धा रखो, गुरुवार को भगवान सिंगबोगा की आराधना करो व इस दिन हल मत चलाओ यह सब सदेश भगवान बिरसा मुंडा ने दिये हैं। षड्यत्रपूर्वक जिन्हे आर्य कहा गया और वे जिन्हे अनार्य कहा गया दोनों ही वन, नदी, पेड़, पहाड़, भूमि, गाय, बैल, सर्प, नाग, सूर्य, अग्नि आदि की पूजा हजारों वर्षों से पूजा करते चले आ रहे हैं। भारत के सभी जनजातीय समुदाय जैसे गोंड, मुंडा, खड़िया, हो, किरात, बोडो, भील, कोरकू, डामोर, खासी, सहरिया, संथाल, बैगा, हलबा, कोलाम, मीणा, उरांव, लोहरा, परधान, बिरहोर, परधी, आंध, टाकणकार, रेण्ही, टोडा, बडागा, कोंडा, कुरुम्बा, काडर, कन्निकर, कोया, किरात आदि आदि के जीवन यापन, संस्कृति, दैनंदिन जीवन, खानपान, पहनावे, परम्पराओं, प्रथाओं का मूलाधार हिंदुत्व ही है। अब ऐसी स्थिति मे भारत मे मूलनिवासी दिवस की अवधारणा का स्थान कहां रह जाता है? हां, भारत मे हमारे भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को शासकीय व सामाजिक स्तर पर हजनजातीय गौरव दिवसह व उत्सव के रूप मे अवश्य ही मनाया जाना चाहिए।

ऐतिहासिक होगी प्रशांत किशोर की पदयात्रा बिहार के किसी नेता ने नहीं की है अब तक इतनी लंबी पैदल यात्रा



प्रशांत किशोर इन दिनों बिहार में 'जन सुराज' अभियान के तहत जनता के बीच जा रहे हैं। प्रशांत किशोर बताते हैं कि इस अभियान का उद्देश्य बिहार को विकास के मामलों में देश के अग्रणी राज्यों के साथ खड़ा करना है। इसके लिए बिहार में एक नई राजनीतिक व्यवस्था बनानी पड़ेगी। इस नई व्यवस्था को बनाने के लिए उन्होंने नारा दिया है - "सही लोग, सही सोच और सामूहिक प्रयास"।

क्या है सही लोग, सही सोच और सामूहिक प्रयास?

प्रशांत किशोर बिहार के अलग अलग जिलों में प्रवास कर रहे हैं और सही लोगों की तलाश कर रहे हैं। उनका मानना है कि सही लोग समाज के बीच में ही रहने वाले लोग हैं, उनको खोजने के लिए समाज को मथना पड़ेगा। इसी से सही लोग निकल कर सामने आएंगे। प्रशांत किशोर अपने संबोधनों में बताते हैं कि सही सोच से मतलब है 'सुराज' यानी सुशासन। ऐसा सुराज जो किसी व्यक्ति या दल का न होकर जनता का हो उसी का नाम 'जन सुराज' है। सामूहिक प्रयास से आशय है कि एक ऐसे राजनीतिक मंच की परिकल्पना जो लोगों को उनकी क्षमता के अनुसार बिहार को विकसित करने के लिए सामूहिक प्रयास करने का अवसर प्रदान करे और इससे जुड़े वाले लोग ही यह निर्णय करें कि एक नया राजनीतिक दल बनाया जाए अथवा नहीं।

प्रशांत किशोर ने 5 मई 2022 को पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी थी कि 2 अक्टूबर 2022 से वो बिहार में पदयात्रा करेंगे। यह पदयात्रा लगभग 3000 किलोमीटर लंबी होगी और अनुमान है कि इसे पूरा करने में 12 से 15 महीनों का समय लग

सकता है। इस पदयात्रा के माध्यम से प्रशांत किशोर बिहार के समाज और बिहार की समस्याओं को सीधे जनता के बीच जाकर समझना चाहते हैं। उनका मानना है कि अगर समस्याओं को समझना है और उसका समाधान निकालना है तो ये दोनों जनता के पास है। इसके लिए समाज में लोगों के बीच जाना पड़ेगा और उसमें से सही लोगों को एक मंच पर लाना पड़ेगा। पदयात्रा के दौरान प्रशांत किशोर बिहार के हर जिले में एक लंबा समय बिताएंगे। वे वहां के सभी लोगों से मिलने का प्रयास करेंगे जो बिहार के विकास लिए सकारात्मक प्रयास करना चाहते हैं।

देश में कई नेता कर चुके हैं लंबी पदयात्राएं

हमारे देश में पदयात्रा का इतिहास काफी पुराना रहा है और नेताओं ने कई बड़ी और ऐतिहासिक पदयात्राएं की हैं। आजादी से पहले महात्मा गांधी ने चापरण सत्याग्रह के दौरान, दांडी मार्च के दौरान और अन्य कई मौकों और पदयात्राएं की थी। इसका परिणाम भी सकारात्मक निकला था। आजादी के बाद भी देश के कई नेताओं ने पदयात्रा की है। इस सूची में सबसे बड़ा नाम पूर्व प्रधानमंत्री और समाजवादी नेता चंद्रशेखर का आता है। चंद्रशेखर ने साल 1983 में कन्याकुमारी से दिल्ली के राजघाट तक की पैदल यात्रा की थी। इस पदयात्रा को 'भारत यात्रा' का नाम दिया गया था। इस दौरान चंद्रशेखर ने 4260 किमी की दूरी पैदल चल कर तय की थी। इस यात्रा के 7 साल बाद 1990 में चंद्रशेखर देश के प्रधानमंत्री बने थे। चर्चित पदयात्राओं की सूची में दूसरा नाम नेता सह अभिनेता सुनील दत्त का आता है। सुनील दत्त ने 1987 में पंजाब में 2000



किमी की लंबी पदयात्रा की थी। उस दौरान पंजाब में चरमपंथी ताकतें मजबूत थीं। उन्होंने इस पदयात्रा के माध्यम से लोगों से शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील की थी।

इसके बाद पदयात्राओं की सूची में नाम आता है आंध्र प्रदेश के नेताओं का। इसमें 2003 में पूर्व मुख्यमंत्री वाईएसआर रेण्डी की 1500 किमी लंबी पदयात्रा, 2013 पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की 1700 किमी लंबी पदयात्रा और 2017 से 2019 के बीच वर्तमान मुख्यमंत्री जगन मोहन रेण्डी की 3648 किमी लंबी पदयात्रा शामिल है। इन नेताओं को पदयात्रा का लाभ भी मिला और ये तीनों पदयात्रा के बाद होने वाले विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत हासिल कर मुख्यमंत्री बने थे। इसके अलावा एक नाम और है मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिविजय सिंह का। दिविजय सिंह ने 2017 से 2018 के बीच 'नर्मदा यात्रा' के नाम से 3300 किमी लंबी पदयात्रा 192 दिनों में पूरी की थी। इसका परिणाम भी 2018 के मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में दिखा। कांग्रेस पार्टी मध्य प्रदेश में 15 साल बाद सत्ता में वापस लौटी। हालांकि पार्टी सत्ता को बहुत दिनों तक संभाल कर नहीं रख पाई और 2 साल के भीतर फिर से भाजपा सरकार वापस आ गई।

बिहार में क्या है पदयात्रा का इतिहास

बिहार में नेताओं के पदयात्रा का कई बड़ा उदाहरण नहीं मिलता है। सबसे हाल में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 2017 में चंपारण सत्याग्रह के 100 साल पूरे होने पर 7 किमी की एक सांकेतिक पदयात्रा में शामिल हुए थे। इस पदयात्रा में उनके साथ तत्कालीन उप-मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी शामिल हुए थे। बिहार के वरिष्ठ पत्रकार बताते हैं कि बिहार की राजनीति में किसी नेता ने बड़ी पदयात्रा नहीं की है। पूर्व मुख्यमंत्री कपूरी ठाकुर और लालू यादव जनता के बीच अक्सर पैदल चलते थे। लेकिन उसे एक संरचित पदयात्रा नहीं कहा जा सकता है।

प्रशांत किशोर अगर आपने वक्तव्य के मुताबिक बिहार में 3000 किमी लंबी पदयात्रा पूरी करते हैं तो पदयात्राओं के मामले में बिहार में एक नया कीर्तिमान स्थापित होगा। इस पदयात्रा का बिहार के राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर क्या असर होगा ये तो समय ही बताएगा लेकिन इतना तय है कि इसकी चर्चा बिहार से लेकर दिल्ली तक होगी और सबकी निगाहें प्रशांत किशोर पर होगी।

देश में जन्मना जाति व्यवस्था

लगभग 1350 वर्ष पूर्व आरम्भ हुई



वेद मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव को महत्व देते हैं। जो मनुष्य श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव वाला है वह द्विज और गुण रहित व अल्पगुणों वाला है उसे शूद्र कहा जाता है। द्विज ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य को कहते हैं जो गुण, कर्म व स्वभाव की उत्तमता से होते हैं। ब्राह्मण वह होता है जो वेद आदि ग्रन्थों का ज्ञान खनने के साथ विद्या का पढ़ना व पढ़ाना, यज्ञ करना व करना तथा दान देना व लेना यह छः कर्म करते हैं। मनुसमृति के अनुसार अपने लिए दान लेने को नीच कर्म बताया गया है। ब्राह्मणों के विषय में ऋषि लिखते हैं कि मन से बुरे काम की इच्छा भी न करनी और उस मन को अधर्म में कभी प्रवृत्त न होने देना, श्रोत्र और चक्षु आदि इतिहासों को अन्यायाचरण से रोक कर धर्म में चलाना, सदा ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय होके धर्मार्नुष्ठान करना। जल से बाहर के अंग, सत्याचार से मन, विद्या और धर्मार्नुष्ठान से जीवात्मा और ज्ञान से बुद्धि पवित्र होती है। भीतर के राग, द्वेषादि दोष और बाहर के मलों को दूर कर शुद्ध रहना अर्थात् सत्यासत्य के विवेक पूर्वक सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग से निश्चय ही पवित्र होता है। निन्दा स्तुति, सुख दुःख, शीतोष्ण, क्षुधा तृष्णा, हानि लाभ, मानापामान आदि हर्ष शोक को छोड़ के धर्म में ढृ निश्चय रहना। कोमलता, निरभिमान, सरलता, सरलत्स्वभाव रखना, कुटिलतादि दोष छोड़ देना। सब

वेदादि शास्त्रों को सांगोपांग पढ़ने पढ़ाने का सामर्थ्य, विवेक अर्थात् सत्य का निर्णय करना। जो वस्तु जैसी हो अर्थात् जड़ को जड़ चेतन को चेतन जानना और मानना। विज्ञान अर्थात् पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों को विशेषता से जानकर उन से यथायोग्य उपयोग लेना, कभी वेद, ईश्वर, मुक्ति, पर्व परजन्म, धर्म, विद्या, सत्संग, माता, पिता, आचार्य और अतिथियों की सेवा को न छोड़ना और निन्दा कभी न करना। यह पन्द्रह कर्म और गुण ब्राह्मण वर्णस्थ मनुष्यों में अवश्य होने चाहिये। उपर्युक्त ब्राह्मण वर्ण के लक्षण व योग्यतायें भगवदीता और मनुसमृति के आधार पर कहे गये हैं।

अब क्षत्रिय वर्ण के लक्षणों पर भी वृद्धि डालते हैं। क्षत्रिय का काम न्याय से प्रजा की रक्षा करना अर्थात् पक्षपात छोड़कर श्रेष्ठों का सक्लकार और दुष्टों का तिरस्कार करना, सब प्रकार से सब का पालन, दान अर्थात् विद्या, धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थों का व्यय करना, अग्निहोत्रादि यज्ञ करना वा करना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना तथा पढ़ाना और विषयों में न फंस कर जितेन्द्रिय रह के सदा शरीर और आत्मा से बलवान् रहना। सैकड़ों सहस्रों से भी युद्ध करने में अकेले को भय न होना, सदा तेजस्वी अर्थात् दीनतराहित प्रगल्भ ढृ रहना। धैर्यवान होना, राजा और प्रजासम्बन्धी व्यवहार और सब शास्त्रों में अति चतुर

होना, युद्ध में भी ढृ निःशंक रह के उस से कभी न हटना न भागना अर्थात् इस प्रकार से लड़ना कि जिस से निश्चित विजय होवे, आप बचे, जो भागने से वा शत्रुओं को धोखा देने से जीत होती हो तो ऐसा ही करना। दानशीलता रखना। पक्षपात रहित होके सब के साथ यथायोग्य वर्तना, विचार के देवें, प्रतिज्ञा पूरा करना, उस को कभी भंग होने न देना। यह 11 क्षत्रिय वर्ण के गुण भी मनुसमृति और भगवदीता के आधार पर हैं।

वैश्य के गुण, कर्म व स्वभाव यह हैं कि गाय आदि पशुओं का पालनझवर्धन करना, विद्या धर्म की वृद्धि करने करने के लिये धनादि का व्यय करना, अग्निहोत्रादि यज्ञों का करना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, सब प्रकार के व्यापार करना, एक सैकड़े में चार, छः, आठ, बाहर वा बीस आरों (प्रति वर्ष) से अधिक व्याज और मूल से दूना अर्थात् एक रुपया दिया तो सौ वर्ष में भी दो रुपये से अधिक न लेना और न देना तथा खेती करना।

शूद्र वर्ण गुण, कर्म व स्वभाव से होता है। वैदिक वर्ण व्यवस्था में शूद्र वर्ण जन्म से नहीं होता है। विद्या शून्य मनुष्य जो स्वस्य शरीर और सदुण्डों को धारण किये हों वह शूद्र कहलाते हैं। शूद्र मनुष्य को योग्य है कि वह निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दोषों को छोड़ के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा यथावत् करनी और उसी से

अपना जीवनझायापन करना यही एक शूद्र का कर्म व गुण है। वर्ण व्यवस्था विषयक उपर्युक्त बातें ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में कही हैं। वह कहते हैं कि उन्होंने उपर्युक्त बातें संक्षेप से वर्णों के गुण और कर्म विषयक कही हैं। जिस-जिस पुरुष में जिस-जिस वर्ण के गुण कर्म हों, उसको उस-उस वर्ण का अधिकार देना। ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं। (आजकल लगभग व कुछ कुछ यही व्यवस्था वर्तमान है। -लेखक) क्योंकि उत्तम वर्णों को भय होगा कि जो हमारे सन्तान मूर्खत्वादि दोषयुक्त होंगे तो शूद्र हो जायेंगे और सन्तान भी डरते रहेंगे कि जो हम उक्त चालचलन और विद्यायुक्त न होंगे तो शूद्र होना पड़ेगा। और क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्ण के मनुष्यों को उत्तम वर्णस्थ बनाने के लिए उत्साह बढ़ेगा।

ऋषि दयानन्द आगे कहते हैं कि विद्या और धर्म के प्रचार का अधिकार ब्राह्मण को देना क्योंकि वे पूर्ण विद्यावान् और धार्मिक होने से उस काम को यथायोग्य कर सकते हैं। क्षत्रिय को राज्य के अधिकार देने से कभी राज्य की हानि वा विघ्न नहीं होता। पशुपालन आदि का अधिकार वैश्यों ही को होना योग्य है क्योंकि वे इस काम को अच्छे प्रकार कर सकते हैं। शूद्र को सेवा का अधिकार इसलिये है कि वह विद्या रहित मूर्ख होने से विज्ञान सम्बन्धी काम कुछ भी नहीं कर सकता किन्तु शरीर के काम सब कर सकता है। इस प्रकार वर्णों को अपने-अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि सभ्य जनों का काम है। हमने ऋषि दयानन्द वर्णित वैदिक वर्णव्यवस्था का वेद, मनुस्मृति, भगवद्गीता आदि के आधार पर उल्लेख किया है। इसमें कहीं किसी के साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं है। यह व्यवस्था महाभारत युद्ध से कुछ वर्ष पूर्व तक भली भाँति चली। उसके बाद उसमें शिथिलता आनी आरम्भ हो गई थी। लगभग 1300-1400 वर्ष पूर्व यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। इसके बाद से जन्मना जाति के आधार पर भेदभाव आरम्भ हो गया। स्त्री व शूद्र वर्ण के बन्धुओं को विद्या के अधिकार से निषिद्ध कर दिया गया। इससे भारत में मनुष्य समाज का घोर पतन हुआ। सोमनाथ, कृष्ण जन्म भूमि, काशी विश्वनाथ आदि सहित सहस्रों मन्दिरों का विध्वंस मुस्लिम व अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में हुआ। इस पतन का कारण हमारी जन्मना जातीय सामाजिक भेदभाव पूर्ण व्यवस्था सहित अवैदिक वा वेद विरुद्ध मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष आदि अन्धविश्वास आदि कार्य रहे।

यह बता दें कि महर्षि दयानन्द सितम्बर, 1876 में वेद प्रचारार्थ लखनऊ आये थे। लखनऊ के रईस लाला ब्रजलाल ने उनके पास 26 प्रश्न समाधानार्थ भेजे थे जिनके ऋषि दयानन्द जी ने सटीक उत्तर लिखाये और उन्हें लाला ब्रजलाल को भिजवाया दिया था। उन 26 प्रश्नों में से पहला प्रश्न था ह्याब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किस प्रकार हैं और किसने बनाये हैं? इसका उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा कि कर्मों की वृष्टि से चारों वर्ण ठीक हैं और लोक व्यवहार से ठीक नहीं है अर्थात् जो जैसा कर्म करे वैसा उसका वर्ण है। उदाहरणार्थ, जो ब्रह्म विद्या जाने वह ब्राह्मण, जो युद्ध करे वह क्षत्रिय, जो जो लेन-देन, हिसाब-किताब करे वह वैश्य और जो सेवा करे वह शूद्र है। यदि ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति क्षत्रिय या शूद्र का काम करे तो ब्राह्मण नहीं। सारांश यह है कि वर्ण कर्मों से होता है, जन्म से नहीं। जन्म से (गुण, कम



हमने ऋषि दयानन्द वर्णित वैदिक वर्णव्यवस्था का वेद, मनुस्मृति, भगवद्गीता आदि के आधार पर उल्लेख किया है। इसमें कहीं किसी के साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं है। यह व्यवस्था महाभारत युद्ध से कुछ वर्ष पूर्व तक भली भाँति चली। उसके बाद उसमें शिथिलता आनी आरम्भ हो गई थी। लगभग 1300-1400 वर्ष पूर्व यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। इससे भारत में मनुष्य समाज का घोर पतन हुआ। सोमनाथ, कृष्ण जन्म भूमि, काशी विश्वनाथ आदि सहित सहस्रों मन्दिरों का विध्वंस मुस्लिम व अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में हुआ। इस पतन का कारण हमारी जन्मना जातीय सामाजिक भेदभाव पूर्ण व्यवस्था सहित अवैदिक वा वेद विरुद्ध मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष आदि अन्धविश्वास आदि कार्य रहे।

यह चारों वर्ण लगभग बारह सौ वर्ष से बने हैं (यह वाक्य ऋषि दयानन्द ने सितम्बर, 1876 में लिखे थे)। जिसने जन्म से यह वर्ण बनाये उसका नाम इस समय स्मरण नहीं परन्तु महाभारत आदि के पीछे बने हैं। ऋषि दयानन्द के इन वर्णों वा प्रमाण से यह स्पष्ट होता है कि जन्मना जाति व्यवस्था वा विकृत वर्ण-व्यवस्था अब से लगभग 1350 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आयी थी। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में हजारों ग्रन्थ पढ़े थे जिसमें से वह 3000 ग्रन्थों को प्रामाणिक मानते थे। उन सब ग्रन्थों का निष्कर्ष ऋषि के उक्त विचार हैं जो गहन शोध व अनुसंधान का परिणाम हैं। अतः सभी आर्यसमाज के विद्वान् व सदस्यों को यह ज्ञात होना चाहिये कि जन्मना जाति व्यवस्था अब से लगभग 1350 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आयी है। इससे पूर्व जन्मना जाति सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता था। तो इस सौ वर्ष पूर्व हुए चारणक्य के काल में जन्मना जातिवाद नहीं था। यदि होता तो आजकल की तरह सबके नाम के साथ जन्मना जाति सूचक शब्द जुड़े हुए होते। यह आचार्य चारणक्य के बहुत वर्णों बाद प्रचलित हुआ। अतः ऋषि दयानन्द की यह घोषणा व खोज तर्क व प्रमाणों के आधार पर उठी होने से ग्राह्य है।

हमने इस लेख में वैदिक वर्ण व्यवस्था के प्रामाणिक विद्वान् ऋषि दयानन्द के विचार दिये हैं। उन्हीं के वर्णों के आधार पर जन्मना जाति व्यवस्था के प्रचलित होने की जानकारी भी दी है। बहुत से पढ़े लिखे लोग कई बार बिना छानबीन किए कह देते हैं कि जन्मना जाति व्यवस्था हजारों व लाखों वर्णों से चल रही है। यह पूर्णतया अप्रामाणिक है। इसका निराकरण करने के लिए ही हमने यह पर्कियां लिखी हैं। ओऽम् शम्

भारत में तीर्थस्थल उत्पन्न करते हैं योजनाएँ अवसर इसलिए भी इन्हें किया जा रहा है विकसित

अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश की श्रीमान योगी सरकार ने घोषणा की है कि वे उत्तर प्रदेश में 6 जिलों (सीतापुर, लखीमपुर, पीलीभीत, बरेली, शाहजहांपुर एवं फरुखाबाद) के 5 तीर्थस्थलों को आपस में जोड़ने हेतु 500 किलोमीटर से भी लम्बा श्री परशुराम तीर्थ सर्किट बनाने जा रहे हैं। ये पांचों तीर्थ स्थल, नैमिष धाम, महर्षि दधीचि स्थल मिश्रिख, गोला गोकर्णनाथ, गोमती उद्धम, पूर्णगिरी मां के मंदिर के बॉर्डर से बाबा नीम कोरोरी धाम और जलालाबाद परशुराम की जन्मस्थली, हिंदुओं की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं। इसी प्रकार दक्षिण भारत की शैली में वृदावन के ह्यांगजीह मंदिर के आसपास के क्षेत्र का सौंदर्यीकरण कर उसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस परियोजना को पूर्ण करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने 16.20 करोड़ रुपये की कार्ययोजना बनाई है। इस दिव्यदेश मंदिर का निर्माण वर्ष 1833 में शुरू हुआ था। भगवान नारायण के लोकों के ह्यांगजीह की संज्ञा दी जाती है। दिव्यदेश की पहचान पांच प्रमुख स्तंभों से होती है। इसमें गुरुड़ स्तंभ, गोपुरम, पुक्करणी, पुष्प उद्यान और गोशाला होती है। ऐसे 107 दिव्यदेश भारत में और एक नेपाल में स्थित हैं।

अयोध्या में भी भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण कार्य जोर शोर से चल रहा है। 5 अगस्त 2020 को शुरू हुए श्रीराम मंदिर के निर्माण कार्य का लगभग एक तिहाई काम सम्पन्न हो चुका है। अब श्रीराम मंदिर के गर्भगृह का निर्माण कार्य शुरू हुआ है। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने गर्भगृह की पहली शिला रखते हुए कहा कि श्रीराम जन्मभूमि मंदिर ह्यांगजीह का रूप ले लेगा। 1100 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से बनने वाले इस श्रीराम मंदिर के निर्माण में अभी तक 192 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। श्रीराम जन्मभूमि परिसर से कुछ दूरी पर दक्षिण भारत के द्रविड़ शैली में भव्य श्रीरामलला देवस्थानम मंदिर भी बनाया जा रहा है।

पूर्व में केंद्र सरकार ने भी देश के 12 शहरों को ह्यांगजीह योजना के अंतर्गत भारत के विरासत शहरों के तौर पर विकसित करने की घोषणा की है। ये शहर हैं, अमृतसर, द्वारका, गया, कामाख्या, कांचीपुरम, केदारनाथ, मथुरा, पुरी, वाराणसी, वेल्लाङ्कनी, अमरावती एवं अजमेर। हृदय योजना के अंतर्गत इन शहरों का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है ताकि इन शहरों की पुरानी विरासत को पुनर्विकसित कर पुनर्जीवित किया जा सके। इस हेतु देश में 15 धार्मिक सर्किट भी विकसित किये जा रहे हैं। जिनमें शामिल हैं, हिमालय सर्किट, नोथईंस्ट सर्किट, कृष्ण सर्किट, बुद्धिस्तर सर्किट, कोस्टल सर्किट, डेर्जर्ट सर्किट, ट्राइबल सर्किट, वाइल्ड लाइफ सर्किट, रुरल सर्किट, स्पीरीचुअल सर्किट, गमायण सर्किट, हेरीटेज सर्किट, तीर्थकर सर्किट एवं सूरी सर्किट। ह्यांगजीह योजना को लागू करने के बाद से केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने कई परियोजनाओं



को स्वीकृति प्रदान कर दी है। इनमें से अधिकतर परियोजनाओं पर काम भी प्रारम्भ हो चुका है। इन सभी योजनाओं का चयन सम्बन्धित राज्य सरकारों की राय के आधार पर किया गया है।

इसी प्रकार, पर्यटन मंत्रालय ने ह्यांगजीह नामक एक विशेष योजना को प्रारम्भ किया है। जिसके अंतर्गत 15 राज्यों में धार्मिक स्थलों पर 24 परियोजनाओं के माध्यम से बुनियादी ढांचे को विकसित करने के उद्देश्य से पर्यटन मंत्रालय द्वारा वित्त की व्यवस्था की जाती है। ह्यांगजीह योजना के अंतर्गत रोड, रेल एवं जलमार्ग के माध्यम से परिवहन की व्यवस्था विकसित की जा रही है।

इन चुने हुए धार्मिक स्थलों पर बैंकों के एटीएम का जाल बिछाया गया है। वाहनों के पार्किंग की व्यवस्था, पीने के पानी की व्यवस्था, रेस्ट रूम का निर्माण, वेटिंग रूम का निर्माण, फर्स्ट-एड के अंतर्गत दवाईयों की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, दूरसंचार के साधनों की व्यवस्था, आदि की जा रही है। इन विभिन्न परियोजनाओं को निजी एवं सरकारी क्षेत्र में, पीपीपी मॉडल के अंतर्गत, संयुक्त रूप से चलाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस योजना को सफल बनाने के लिए केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भी प्रयास किए जा रहे हैं।

केंद्र सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार भारत में धार्मिक स्थलों को विकसित करने में एकाएक इतनी दिलचस्पी क्यों लेने लगी है? इसका उत्तर दरअसल इस तथ्य में छुपा है कि भारत में यात्रा एवं पर्यटन उद्योग 8 करोड़ व्यक्तियों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से रोजगार प्रदान कर रहा है एवं देश के कुल रोजगार में पर्यटन उद्योग की 12 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। भारत में प्राचीन समय से धार्मिक स्थलों की यात्रा, पर्यटन उद्योग में, एक विशेष स्थान रखती है। एक अनुमान के अनुसार, देश के पर्यटन में धार्मिक यात्राओं की हिस्सेदारी 60 से 70 प्रतिशत के बीच रहती है। देश के पर्यटन उद्योग में लगभग 19 प्रतिशत की वृद्धि दर अर्जित की जा रही है जबकि वैश्विक स्तर पर पर्यटन उद्योग केवल 5 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज कर रहा है। भारत में पर्यटन उद्योग लगभग 23,400 करोड़ अमेरिकी डॉलर की आय अर्जित कर रहा है। देश में पर्यटन उद्योग में 87 प्रतिशत हिस्सा देशी पर्यटन का है जबकि शेष 13 प्रतिशत हिस्सा विदेशी पर्यटन का है। अतः भारत में रोजगार के नए अवसर निर्मित करने के उद्देश्य से केंद्र एवं उत्तर प्रदेश सरकार धार्मिक स्थलों को विकसित करने हेतु प्रयास कर रही हैं।

पर्यटन उद्योग में कई प्रकार की आर्थिक गतिविधियों का समावेश रहता है। यथा, अतिथि सत्कार, परिवहन, यात्रा इंतजाम, होटल आदि। इस क्षेत्र में व्यापारियों, शिल्पकारों, दस्तकारों, संगीतकारों, कलाकारों, होटेल, बेटर, कूली, परिवहन एवं टूर आपरेटर आदि को भी रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

उक्त कारणों में चलते हाल ही के समय में भारत में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार के चार मंत्रालय झ पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, रेल्वे मंत्रालय एवं परिवहन मंत्रालय, आपस में तारतम्य बनाते हुए मिलकर कार्य कर रहे हैं। इन चारों मंत्रालयों के सुयुक्त प्रयासों से देश में धार्मिक यात्राओं को आसान बना दिया गया है। परिवहन मंत्रालय द्वारा विभिन्न तीर्थ स्थलों पर आसानी से पहुंचने हेतु मार्गों को विकसित किया गया है एवं बुनियादी ढांचे को भी विकसित किया जा रहा है। जिसके चलते देश के नागरिकों द्वारा धार्मिक यात्राएं करने की मात्रा में काफी उच्चाल देखने में आ रहा है।

भारतीय रेल ने कई विशेष सर्किट मार्ग पर विशेष रेलगाड़ियों को चलाने का अधिकार भी प्राप्त किया है। नवम्बर 2018 से श्री रामायण एक्सप्रेस नामक विशेष रेलगाड़ी प्रारम्भ की गई है। यह रेल भारत एवं श्रीलंका में प्रभु श्रीराम से सम्बंधित महत्वपूर्ण स्थानों के मार्ग के बीच चलायी जा रही है। यह रेल प्रभु श्रीराम के जन्म स्थान अयोध्या से प्रारम्भ होती है एवं रेल के मार्ग में पड़ने वाले प्रभु श्रीराम की श्रद्धा के प्रमुख केंद्रों पर रुकती है। साथ ही, यदि श्रद्धा स्थल रेल्वे मार्ग से कुछ दूरी पर स्थित है तो भारतीय रेल श्रद्धालुओं को उक्त स्थानों पर पहुंचाने की व्यवस्था भी करती है। इस तरह की कई अन्य विशेष रेलगाड़ियां राजकोट, जयपुर एवं मुरुई आदि स्थानों से भी चलाई जा रही हैं।

साथ ही अब वैष्णो देवी मंदिर पर पहुंच मार्ग को भी आसान बना दिया गया है। अब जम्मू-उथम्पुर-कट्टरा रेल्वे लाइन भी प्रारम्भ कर दी गई है। अब दिल्ली से कट्टरा तक रेल सेवा उपलब्ध करा दी गई है। कई रेलगाड़ियां अब सीधे कट्टरा तक पहुंच रही हैं। इससे



वैष्णो देवी मंदिर के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं को बहुत आसानी हो गई है। इसी प्रकार, एक विशेष पर्यटन रेलगाड़ी भारत दर्शन के लिए भी चलायी जा रही है। इस पैकेज टूर में 6 धार्मिक स्थल शामिल किए गए हैं, यथा, बैद्यनाथ, गंगासागर, कोलकाता, वाराणसी, प्रयागराज, आदि।

बुद्धिस्त सर्किट पर भी विशेष रेलगाड़ियां अब चलाई जाने लगी हैं। विशेष पैकेज टूर के अंतर्गत बोद्धगया, नालंदा एवं वाराणसी शहरों के बीच 8 दिन की धार्मिक यात्रा सम्पन्न कराई जा रही है। भगवान बुद्ध के दर्शनार्थ यात्रा विभिन्न देशों यथा जापान, चीन, थाईलैंड एवं श्रीलंका आदि से आते हैं। बुद्धिस्त सर्किट पर पड़ने वाले अन्य धार्मिक स्थलों के दर्शन भी विदेशों से आए हुए इन यात्रियों को कराए जाते हैं एवं इनके सुख सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है। पूरी सुविधाएं रेल्वे विभाग द्वारा प्रदान की जाती हैं।

गुरुद्वारा सर्किट पर पंज तख्त एक्सप्रेस नामक रेलगाड़ी चलायी जा रही है। इसके माध्यम से सिख धर्मावलबियों को इस सर्किट पर पड़ने वाले गुरुद्वारों की यात्रा बहुत ही सहज तरीके से करायी जा रही है। इनमें शामिल हैं, अमृतसर में श्री अकाल तख्त, श्री आनन्दपुर साहिब में तख्त केशगाड़, भटिंडा में तख्त श्री दमदाम साहिब, पटना में तख्त श्री पटना साहिब एवं नादेड़ में तख्त श्री हजूर साहिब।

उत्तराखण्ड में चार धाम झ केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगेत्री एवं यमुनोत्री झ को भी बारहों महीने के लिए रोड के माध्यम से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह एक विशेष सर्किट के तौर पर विकसित किया जा रहा है।

उक्त विभिन्न सर्किट को विकसित करने के पीछे भारत की जड़ें तलाशने के साथ ही देश में धार्मिक पर्यटन को पंख देने की मंशा भी काम कर रही है। योग एवं अयुर्वेद भी हाल ही के समय में विदेशों में काफी लोकप्रिय हो गया है अतः इसकी खोज के लिए विदेशों से भी कई पर्यटक भारत में धार्मिक पर्यटन करने के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इससे विदेशी पर्यटन भी देश में तेजी से वृद्धि दर्ज कर रहा है। केंद्र सरकार के साथ साथ हम नागरिकों का भी कुछ कर्तव्य है कि देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हम भी कुछ कार्य करें। जैसे प्रत्येक नागरिक, देश में ही, एक वर्ष में कम से कम दो देशी पर्यटन स्थलों का दौरा अवश्य करे। विदेशों से आ रहे पर्यटकों के आदर सत्कार में कोई कमी न रखें ताकि वे अपने देश में जाकर भारत के सत्कार का गुणान करें। आज करोड़ों की संख्या में भारतीय, विदेशों में रह रहे हैं। यदि प्रत्येक भारतीय यह प्रण करे की प्रतिवर्ष कम से कम 5 विदेशी पर्यटकों को भारत भ्रमण हेतु प्रेरणा देगा तो एक अनुमान के अनुसार विदेशी पर्यटकों की संख्या को एक वर्ष के अंदर ही दुगना किया जा सकता है।

ताइवान पर तनाव, अमेरिका का चाव, भारत के भाव



अमेरिका और चीन के बीच तनाव के जो मुद्दे हैं वो बने हुए हैं, याहें वो ताइवान हों, दक्षिण चीन सागर में बढ़ता चीन का प्रभाव हो या फिर दोनों देशों के बीच चल रहा ट्रेड वॉर हो इन सभी से परे ताइवान चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भी साख का सवाल बनता जा रहा है। चीन की आर्थिक हालत इस समय खराब है। शी जिनपिंग ऐसे समय में कमज़ोर नहीं दिखना चाहेंगे, इसलिए वो राष्ट्रवाद का सहारा लेंगे और ताइवान की तरफ जाएंगे। इसलिए चीन ताइवान को लेकर आक्रामक है और भड़काऊ भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

अमेरिकी कांग्रेस की स्पीकर नैसी पेलोसी की ताइवान यात्रा को लेकर दोनों देशों के बीच तीखा तनाव पैदा हो गया है। मंगलवार को जब अमेरिकी कांग्रेस की सांगीकर ताइवान पहुंची तो अमेरिकी फाइटर जेट्स भी पीछे-पीछे सुरक्षा में रवाना हुए। इससे नाराज चीन ने ताइवान के आसपास सैन्य युद्ध अभ्यास का एलान कर

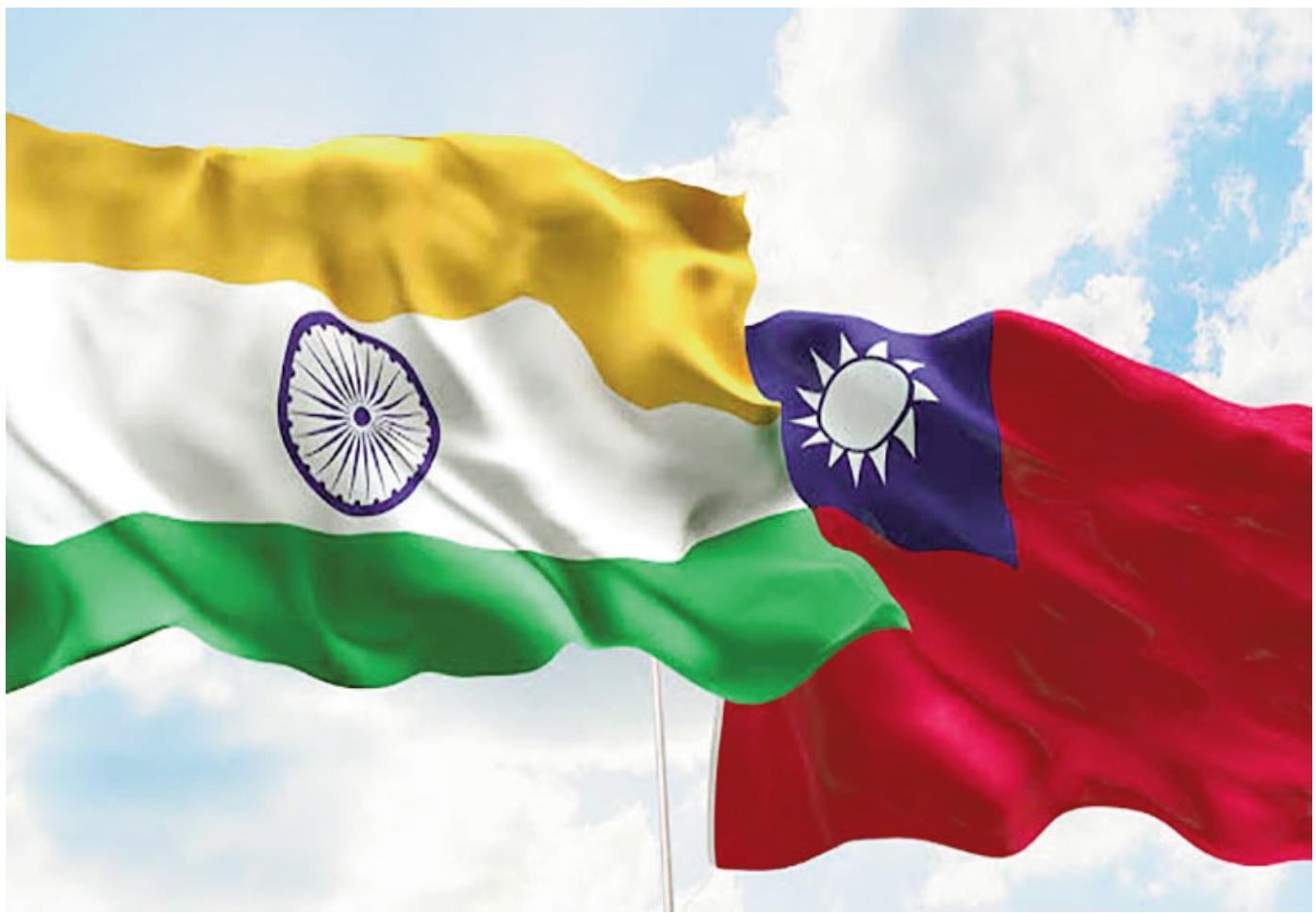
दिया। चीन भड़का हुआ है। अमेरिका ने भी साफ कर दिया कि सुरक्षा के मुद्दे पर अमेरिका ताइवान के साथ खड़ा है। नैसी पेलोसी के दौरे पर चीन क्यों खफा है। क्या रूस और यूक्रेन की तरह चीन और ताइवान के बीच युद्ध की सभावना है। अमेरिकी स्पीकर नैसी पेलोसी की ताइवान यात्रा का चीन ने स्वागत नहीं किया है। इसने दो शक्तिशाली देशों- चीन और अमेरिका के बीच तीव्र तनाव पैदा कर दिया है क्योंकि चीन ताइवान को एक अलग प्रांत के रूप में देखता है।

ताइवान, जो खुद को एक संप्रभु राष्ट्र मानता है, मगर चीन ताइवान को अपना अलग प्रांत मानता है। फिर भी ताइवान अमेरिका को अपना सबसे बड़ा सहयोगी मानता है और अमेरिकी स्पीकर नैसी पेलोसी की ताइवान यात्रा के बाद तुनिया एक नए टकराव की ओर बढ़ रही है। यात्रा के बाद अमेरिका और चीन के बीच तनाव बढ़ गया है, जिसके केंद्र में ग्लोबल सेमीकंडक्टर ट्रेड पर वर्चस्व बनाना है। ऐसा अनुमान है कि ग्लोबल सेमीकंडक्टर कैपेसिटी में अकेले ताइवान की 20 फीसदी हिस्सेदारी होगी। दूसरी ओर अमेरिका और चीन सेमीकंडक्टर के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से हैं। बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार, सेमीकंडक्टर तुनिया में चौथा सबसे ज्यादा ट्रेड होने वाला प्रोडक्ट है। इसमें तुनिया के 120 देश भागीदार हैं।

सेमीकंडक्टर से ज्यादा ट्रेड सिर्फ क्रूड ऑयल, मोटर व्हीकल व उनके कल-पुर्जों और खाने वाले तेल का ही ट्रेड होता है।

ताइवान, आधिकारिक तौर पर चीन गणराज्य, पूर्वी एशिया में एक देश है, और उत्तर पश्चिम प्रशांत महासागर में पूर्वी और दक्षिण चीन सागर के जंक्शन पर जापान और फिलीपींस के बीच है। अर्थव्यालोकी की अधिकांश वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला ताइवान पर निर्भर है। वर्तमान में, केवल 13 देश (प्लस वेटिकन) ताइवान को एक संप्रभु देश के रूप में मान्यता देते हैं। चीन और ताइवान की अर्थव्यवस्थाएं अटूट रूप से जुड़ी हुई हैं। 2017 से 2022 तक 515 बिलियन डॉलर के नियर्यत मूल्य के साथ चीन ताइवान का सबसे बड़ा नियर्यत भागीदार है, जो अमेरिका से दोगुना से अधिक है। ताइवान अन्य द्वीपों की तुलना में मुख्य भूमि चीन के बहुत करीब है, और बींजिंग इसे अपना समझता है क्योंकि 1949 में चीनी क्रांति के दौरान राष्ट्रवादियों को वहाँ से खेदेड़ दिया था।

अमेरिका और चीन के बीच जिन मुद्दों को लेकर तनाव है, उनमें है ट्रेड वॉर- दोनों ने एक-दूसरे के उत्पादों पर आयत कर बढ़ाया है। हाल के सालों में एक-दूसरे पर कई तरह के आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए हैं। समंदर में बढ़ते चीन के प्रभाव और दक्षिण चीन



सागर में चीन के पैर फैलाने से अमेरिका और पश्चिमी मुल्क नाराज हैं। इसे लेकर कई बार दोनों के बीच तनाव चतावनी तक भी बढ़ा है। चीन की घेराबंदी कर अमेरिका पैसिफिक के देशों के साथ संबंध बढ़ाना चाहता है। यहां वो अपने सहयोगी ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर चीन के प्रभाव को रोकने की कोशिश कर रहा है। अमेरिका, यूके और ऑस्ट्रेलिया के बीच हाल में ऑक्स सुरक्षा गठबंधन बना है। अमेरिका चीन पर वीगर अल्पसंखक मुसलमानों के मानवाधिकारों के उल्लंघन का भी आरोप लगाता है, हालांकि चीन इससे इनकार करता रहा है।

अमेरिका और चीन के बीच तनाव के जो मुद्दे हैं वो बने हुए हैं, चाहें वो ताइवान हों, दक्षिण चीन सागर में बढ़ता चीन का प्रभाव हो या फिर दोनों देशों के बीच चल रहा ट्रेड वॉर हो; इन सभी से परे ताइवान चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भी साख का सवाल बनता जा रहा है। चीन की आर्थिक हालत इस समय खराब है। शी जिनपिंग ऐसे समय में कमज़ोर नहीं दिखाना चाहेंगे, इसलिए वो राष्ट्रवाद का सहारा लेंगे और ताइवान की तरफ जाएंगे। इसलिए चीन ताइवान को लेकर आक्रमक है और भड़काऊ भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

आज के वैश्विक परिवेश में अमेरिका की शक्ति कम हो रही है और चीन एक उभरती हुई शक्ति है। जहां तक भारत की बात है, भारत एक अनिश्चित शक्ति है, रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत ने भी वही पक्ष लिया है जो चीन ने लिया है। चीन भारत का पड़ोसी है, दोनों करीब 3488 किलोमीटर की सीमा साझा करते हैं। लेकिन

बीते कुछ सालों से भारत और चीन सीमा विवाद में उलझे हैं। जून 2020 में गलवान घाटी में दोनों मुल्कों के सैनिकों के बीच हुई झड़प के बाद दोनों के रिश्तों में तनाव बढ़ा है। भारत ने दर्जनों चीनी मोबाइल ऐप्स प्रतिबंधित किए हैं और कुछ चीनी उत्पादों पर एंटी डॉपिंग कर भी लगाया है। वहीं, भारत के अमेरिका के साथ मजबूत रिश्ते रहे हैं। चीन का मुकाबला करने के लिए एशिया में भारत अमेरिका का अहम सहयोगी है।

अमेरिका ने खुलकर भारत के साथ रिश्ते मजबूत करने के संकेत भी दिए हैं। ऐसे में अगर चीन और अमेरिका के बीच तनाव बढ़ता है तो उसका असर भारत पर पड़ने की आशंका भी है। भारत और चीन के बीच हाल के सालों में रिश्तों में तनाव आया है। इसी बीच भारत ने ताइवान के साथ अपने संबंधों को निभाने की कोशिश की है। 2020 में गलवान में में हुए विवाद के बाद भारत ने विदेश मंत्रालय में तत्कालीन संयुक्त सचिव (अमेरिका) गौरांगलाल दास को ताइवान में राजनीतिक नियुक्त किया। भारत ने अभी तक तक ताइवान के साथ औपचारिक राजनीतिक रिश्ते नहीं बनाए हैं।

भारत के लिए अहम ये नहीं है कि चीन और अमेरिका बात कर रहे हैं। भारत के लिए अहम ये है कि चीन ने जिस तरह से अमेरिका को स्पष्ट कहा है कि ताइवान के मामले में वो किसी को दखल नहीं देने देगा। इससे भारत के लिए संकेत ये है कि चीन अपने और भारत के तनाव में भी किसी को दखल नहीं देने देगा।

भारत की एक ईस्ट विदेश नीति के एक हिस्से के

रूप में, भारत ने ताइवान के साथ व्यापार और निवेश के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी, र्यावरण के मुद्दों और लोगों से लोगों के आदान-प्रदान में सहयोग विकसित करने की मांग की है। उदाहरण के लिए, नई दिल्ली में भारत-ताइवे एसोसिएशन और ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र। भारत और ताइवान के बीच औपचारिक राजनीतिक संबंध नहीं हैं, लेकिन 1995 के बाद से, दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की राजधानीयों में प्रतिनिधि कार्यालय बनाए रखा है जो वास्तविक दूतावास के रूप में कार्य करते हैं। 1949 से, भारत ने एक चीन नीति को स्वीकार किया है जो ताइवान और तिब्बत को चीन के हिस्से के रूप में स्वीकार करती है।

हालांकि, भारत एक कूटनीतिक बिंदु बनाने के

लिए नीति का उपयोग करता है, अर्थात्, यदि भारत ह्यैक चीनह नीति में विश्वास करता है, तो चीन को ह्यैक भारतह नीति में भी विश्वास करना चाहिए। भले ही भारत ने 2010 से संयुक्त बयानों और आधिकारिक दस्तावेजों में वन चाइना नीति के पालन का उल्लेख करना बंद कर दिया है, लेकिन चीन के साथ संबंधों के ढांचे के कारण ताइवान के साथ उसका जुड़ाव अभी भी प्रतिबंधित है। आखिरकार, ताइवान का मुद्दा केवल एक सफल लोकतंत्र के विनाश की अनुपत्ति देने के नैतिक प्रश्न के बारे में नहीं है, मगर अंतरराष्ट्रीय नैतिकता के बारे में है, ताइवान पर चीन के आक्रमण के अगले दिन एक बहुत ही अलग एशिया दिखेगा, चाहे कुछ भी हो जाए। ऐसे में ताइवान पर तनाव में, अमेरिका का चाव, भारत के भाव निर्णायक साबित होंगे।

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर विशेष

वृद्ध वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं

यह सत्य है कि आज भारत में बुजुर्गों की उपेक्षा हो रही है। इसके लिए कई कारण हैं। बढ़ती हुई महंगाई, पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण, संसाधनों की कमी, संकुचित विचारधारा आदि आदि। आज की पीढ़ी बुजुर्गों के ल्याग को समझना ही नहीं चाहती। इसीलिये संसार के बुजुर्ग लोगों को सम्मान देने के लिये विव वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा इसका उभारंभ किया गया था। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य वृद्धों की वर्तमान समस्याओं, उपेक्षाओं एवं संवेदनहीनता के बारे में जनमानस में जागरूकता बढ़ाना है। वृद्धजनों की उपेक्षा का अर्थ है जीवन में विविध ज्ञान और अनुभवों से वंचित होना। वृद्ध साक्षात् देवता हैं।

वृद्ध हमारी सभ्यता और संस्कृति की धरोहर व समाज के मेरुदंड हैं। इनको सम्मान देने एवं उनकी सेवा करने से आय, शिक्षा, या, बल और आशीर्वाद मिलता है, मार्गदर्शन मिलता है। इनका आदर व सेवा हमारा कर्तव्य ही नहीं, जिम्मेदारी है, मगर आज पाश्चात्य संस्कृति और अपनी तथाकथित आधुनिक संकीर्ण मानसिकता के कारण जो लोग वृद्धजनों की उपेक्षा कर रहे हैं, वे भी आखिर एक दिन वृद्ध होंगे, तब उनके साथ भी वही व्यवहार होगा, जिसकी वे आज नींव डाल रहे हैं। चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा के गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, उसकी आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहात है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारिक जीवन में वृद्धों को सम्मान दें, इसके लिये सही दिया में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारकार्ता ही नहीं, बल्कि व्यक्तिकार्ता की जरूरत है।

लगातार संवेदनानुन्य होते समाज में इन दिनों कई ऐसी घटनाएं प्रकार में आई हैं, जब सपत्नि मोह में वृद्धों की हत्या कर दी गई। ऐसे में स्वार्थ का यह नंगा खेल स्वयं अपने से होता देखकर वृद्धजनों को किन मानसिक आधारों से गुजरना पड़ता होगा, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता। वृद्धावस्था मानसिक व्यथा के साथ सिर्फ सहानुभूति की आ



वृद्ध हमारी सभ्यता और संस्कृति की धरोहर व समाज के मेरुदंड हैं। इनको सम्मान देने एवं उनकी सेवा करने से आय, शिक्षा, यश, बल और आशीर्वाद मिलता है, मार्गदर्शन मिलता है। इनका आदर व सेवा हमारा कर्तव्य ही नहीं, जिम्मेदारी है, मगर आज पाश्चात्य संस्कृति और अपनी तथाकथित आधुनिक संकीर्ण मानसिकता के कारण जो लोग वृद्धजनों की उपेक्षा कर रहे हैं, वे भी आखिर एक दिन वृद्ध होंगे, तब उनके साथ भी वही व्यवहार होगा, जिसकी वे आज नींव डाल रहे हैं। चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा के गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, उसकी आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी।



जोहती रह जाती है। इसके पीछे मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां काम करती हैं। वृद्धजन अव्यवस्था के बोझ और आरीस्क अक्षमता के दौर में अपने अकेलेपन से ज़ूझना चाहते हैं पर इनकी सक्रियता का स्वागत समाज या परिवार नहीं करता और न करना चाहता है। बड़े होरों में परिवार से उपेक्षित होने पर बूढ़े-बुजुर्गों को ह्यूओल्ड होम्स्लू में रण मिल भी जाती है, पर छोटे कस्बों और गांवों में तो ठुकराने, तरसाने, सताए जाने पर भी आजीवन घुट-घुट कर जीने की मजबूरी होती है। यद्यपि ह्यूओल्ड होम्स्लू की स्थिति भी ठीक नहीं है।

विव में इस दिवस को मनाने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु सभी का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि वे अपने बुजुर्गों के योगदान को न भूलें और उनको अकेलेपन की कमी को महसूस न होने दें। हमारा भारत तो बुजुर्गों को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर बनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँचड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। वृद्धावस्था वरदान बनना चाहिए लेकिन वह अभियाप बनता जा रहा है। इसके लिये वृद्धों को स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा। जेम्स गारफील्ड ने कहा भी है कि यदि वृद्धावस्था की झार्यां पड़ती हैं तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो।

भारत में भी दिन-प्रतिदिन हमारे बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा निरंतर बढ़ती जा रही है, जो संवेदनालता का अभाव प्रदाती कर रही है। आज हम पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में अपनी सांस्कृतिक परंपरागत और विरासत में मिली धरोहरों को नष्ट कर रहे हैं। हमारे रीति-रिवाज और सभ्यता ने ही हमें संसार में विव गुरु की उपाधि प्रदान की थी। अमूल्य संस्कार और आचार-विचार की अवहेलना कर हम स्वयं अपना ही नुकसान कर रहे हैं।

आज जीवन में बढ़ता अवसाद, बढ़ते तलाक, बच्चों के सर्वार्थीण विकास में बाधा जैसी समस्याओं की वजह बुजुर्गों की उपेक्षा है। आज दो में बढ़ते वृद्धाश्रम इस बात का जीता जागता उदाहरण है कि हम स्व केंद्रित हो गए हैं। हमें अपनी उपभोक्तावादी तथा अहंकार प्रवृत्ति को नष्ट कर अपने संस्कारों को पुनर्जीवित करना होगा। साथ ही बुजुर्गों को भी कुछ संतुलन के साथ परिवार के बच्चों को संसारित करने का कर्तव्य निभाना चाहिए।

वृद्ध समाज को दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र ने विव में बुजुर्गों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का निर्णय लिया। यह सच्चाई है कि एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है यानि वह उतना ही विनम्र और दूसरों को फल देने वाला होता है, यही बात समाज के उस वर्ग के साथ भी लागू होती है, जिसे आज की तथाकथित युवा तथा उच्च किश्त प्राप्त पीढ़ी बूढ़ा कहकर वृद्धाश्रम में छोड़ देती है।

जिस घर को बनाने में एक इंसान अपनी पूरी जिंदगी लगा देता है, वृद्ध होने के बाद उसे उसी घर में एक तुच्छ वस्तु समझ लिया जाता है। बड़े बूढ़ों के साथ यह व्यवहार देखकर लगता है जैसे हमारे संस्कार ही मर गए हैं। बुजुर्गों के साथ होने वाले अन्याय के पीछे एक मुख्य वजह सामाजिक प्रतिष्ठा मानी जाती है। तथाकथित व्यक्तिवादी एवं सुविधावादी सोच ने समाज की संरचना को बदसूरत बना दिया है। सब जानते हैं कि आज हर इंसान समाज में खुद को बड़ा दिखाना चाहता है और दिखावे की आड़ में बुजुर्ग लोग उसे अपनी आन-ौकत एवं सुंदरता पर एक काला दाग दिखते हैं। आज बन रहा समाज का सच डरावना एवं संवेदनहीन है। आदमी जीवनमूल्यों को खोकर अखिंगर कब तक धैर्य रखेगा और क्यों रखेगा जब जीवन के आसपास सबकुछ

बिखरता हो, खोता हो, मिटता हो और संवेदनानुष्य होता हो। डिजियली का मार्मिक कथन है कि यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चाताप। हाल वृद्ध जीवन को पश्चाताप का पर्याय न बनने दे।

वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पती तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। इसीलिये सिसरों ने कामना करते हुए कहा था कि जैसे मैं वृद्धावस्था के कुछ गुणों को अपने अन्दर समाविष्ट रखने वाला युवक को चाहता हूं उतनी ही प्रसन्नता मुझे युवाकाल के गुणों से युक्त वृद्ध को देखकर भी होती है, जो इस नियम का पालन करता है, यीर से भले वृद्ध हो जाए, किन्तु दिमाग से कभी वृद्ध नहीं हो सकता। हाल वृद्ध लोगों के लिये यह जरूरी है कि वे वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं।

मध्यमवर्गीय परिवार के वृद्धों के लिए जीवन का उत्तरार्द्ध पहाड़ बन जाता है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिर में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-नाम खप जाती है, वहीं महिला वृद्ध एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं र्म का विषय है। पर कौन सोचता है, किसे फुसर्त है, वृद्धों की फिर किसे है? भौतिक जिंदगी की भागदौड़ में नई पीढ़ी नए-नए मुकाम ढूँढ़ने में लगी है, आज वृद्धजन अपनों से दूर जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर कवीन्द्र-रवीन्द्र की पौक्तियां उन्नगुनाने को क्यों विवा हैं-हार्दीर्घ जीवन एकटा दीर्घ अभियाप, दीर्घ जीवन एक दीर्घ अभियाप है।

महिला खिलाड़ियों के लिए प्रेरणादायी है चानू की सफलता



राष्ट्रमंडल खेलों का समापन हो गया है और इस बार के राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय भारोतोलकों ने जिस प्रकार भारतीय झंडे को ऊंचा रखा, वह देश के लिए गर्व की बात है। बेटलिफ्टिंग में 55 किलोग्राम भारवर्ग में संकेत ने रजत पदक जीता, जो इस बार के राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का पहला पदक था। 61 किलोग्राम भारवर्ग में 269 किलोग्राम भार उठाकर गुरुजा ने कांस्य पदक जीता। उसके बाद महिलाओं के 49 किलोग्राम भार वर्ग में मीराबाई चानू ने स्वर्ण पदक जीतकर तो इतिहास रच दिया क्योंकि राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का यह पहला स्वर्ण पदक था। बर्मिंघम में सोना जीतने वाली मीराबाई चानू भारत की पहली महिला और जेरेमी लालरिनुंगा देश के पहले पुरुष एथलीट बने। जहां तक मीराबाई की बात है तो उन्होंने 2018 में गोल्डकोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में भी सोना जीता था और पिछले साल टोक्यो ओलम्पिक में रजत पदक जीत चुकी हैं।

मीराबाई कॉमनवेल्थ गेम्स में शुरू से ही विश्वास से भरी नजर आ रही थी और उन्होंने स्नैच राउंड के बाद ही 12 किलो की भारी-भरकम बढ़त बना ली थी। वह शुरू से ही स्वर्ण पदक की पोजीशन पर बरकरार थी और 49 किलोग्राम भार वर्ग में 201 किलो वजन उठाकर कॉमनवेल्थ गेम्स में सोना जीतकर उन्होंने इस श्रेणी में नया रिकॉर्ड भी बनाया। दरअसल चानू ने स्नैच में 88 किलो जबकि क्लीन और जर्क में 113 किलो वजन उठाया। स्नैच का इस श्रेणी में यह राष्ट्रमंडल

खेलों का नया रिकॉर्ड है। अपने पहले प्रयास में मीराबाई चानू ने स्नैच में 84 किलो वजन उठाया और दूसरे प्रयास में वह 88 किलो वजन उठाकर स्वर्ण के ही सर्वश्रेष्ठ की बराबरी करने में सफल रही। हालांकि उन्होंने तीसरे प्रयास में 90 किलो वजन उठाने का भी प्रयास किया लेकिन उसमें सफल नहीं हुई। राष्ट्रमंडल खेलों में पूरे देश को उनसे ऐसे ही स्वर्णिम प्रदर्शन की उम्मीद थी। सोना जीतने पर प्रधानमंत्री मोदी ने भी उन्हें असाधारण बताते हुए कहा है कि प्रत्येक भारतीय बर्मिंघम खेलों में उनके नया रिकॉर्ड बनाने तथा स्वर्ण पदक जीतने से हरित है और उनकी यह सफलता अनेक भारतीयों के लिए प्रेरणा है, खासकर उभरते खिलाड़ियों के लिए।

मणिपुर की 27 वर्षीय स्टार बेट लिफ्टर मीराबाई चानू की यह जीत भारत के लिए इसलिए भी बड़ी उपलब्धि है क्योंकि उन्होंने इन खेलों में लगातार दूसरी बार स्वर्ण जीतकर हर भारतीय का सिर गर्व से ऊचा किया है। इससे पहले पिछले साल ओलम्पिक खेलों में भी रजत पदक जीतकर उन्होंने भारत को गौरवान्वित किया था। चानू पीवी सिंधू के बाद दूसरी ऐसी भारतीय महिला खिलाड़ी हैं, जिसने ओलम्पिक के अब तक के इतिहास में रजत पदक जीता। टोक्यो ओलम्पिक के पहले ही दिन चानू की जीत भारत के लिए इसलिए भी गौरवान्वित करने वाली थी क्योंकि इससे पहले भारत ओलम्पिक खेलों में पहले दिन कभी कोई पदक जीतने में सफल नहीं हुआ था। चानू की ऐतिहासिक जीत के बाद भारत पदक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गया था और ऐसी उपलब्धि देश को उससे पहले कभी हासिल नहीं हुई थी।

हालांकि 2016 के रियो ओलम्पिक में हार के बाद चानू को गहरा सदमा लगा था और उस हार के बाद वह इस कदर टूट गई थी कि उन्हें लगने लगा था कि ओलम्पिक में उनका सफर वहीं खत्म हो गया है। उस हार के बाद चानू मूंच से रोती हुई गई थी लेकिन टोक्यो ओलम्पिक के लिए उनके बुलंद हौसलों का परिचय तभी मिल गया था, जब उन्होंने ओलम्पिक की तैयारी के दौरान सोशल मीडिया पर अपनी एक पोस्ट में लिखा था, ह्यमेनत लगती है, चोट भी लगती है, असफलता का अनुभव होता है इत्यादि। लेकिन सफलता की राह कभी भी किसी के लिए आसान नहीं होती! इन रियो ओलम्पिक की हार की हताशा से उबरने के बाद चानू बुलंद हौसलों के साथ ऐसी हाआयरन लेडीहू बनकर उभरी कि ओलम्पिक में भारोतोलन में उन्होंने न केवल भारत का 21 वर्ष का सूखा खत्म किया बल्कि भारोतोलन में रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी भी बनी। उसी की बदौलत ओलम्पिक खेलों के पहले ही

दिन टोक्यो में पोडियम में भारतीय तिरंगा शान से लहराया।

मणिपुर के नोंगपेक काकचिंग गांव में 8 अगस्त 1994 को जन्मी मीराबाई चानू हालांकि बचपन में तीरदाज बनना चाहती थी लेकिन शायद उनकी किस्मत को कुछ और ही मंजूर था, जो उसे वेटलिफ्टिंग की ओर ले गई। दरअसल आठवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक में उन्होंने जब इम्फाल की ही रहने वाली भारत की विख्यात भारोत्तोलक कुंजुरानी देवी के बारे में पढ़ा तो उन्होंने भी उसी की भाँति भारोत्तोलक बनने और देश के लिए कुछ विशेष करने का निश्चय किया। कोई भी भारतीय महिला भारोत्तोलक अब तक कुंजुरानी से ज्यादा पदक नहीं जीत सकी है। जब चानू ने भारोत्तोलक बनने का निश्चय किया, उस समय तक उन्हें ओलम्पिक खेलों के बारे में कुछ नहीं पता था, तब उनका एक ही सप्ता था कि वह इस खेल में कोई बड़ा सा पदक जीतें। 2007 में जब मीराबाई ने प्रैक्टिस शुरू की तो उनके पास लोहे का बार नहीं था, इसलिए वह तब बांस से ही प्रैक्टिस किया करती थी। चूंकि गांव में कोई ट्रेनिंग सेंटर नहीं था, इसलिए वह 12 साल की उम्र में प्रैक्टिस के लिए ट्रक पर सवार होकर 50-60 किलोमीटर दूर ट्रेनिंग के लिए जाया करती थी। हालांकि चानू का बचपन पहाड़ से जलावान की लकड़ियाँ बीनते हुए संधर्षों के दौर से गुजरा लेकिन इन संधर्षों का मजबूती से सामना करते हुए ओलम्पिक विजेता बनकर 4 फुट 11 इंच की छोटे से कद की चानू ने साबित कर दिखाया कि हौसले बुलांद हों तो मंजिल तक पहुंचना नामुमकिन नहीं होता।

मीराबाई 17 साल की उम्र में जूनियर चैम्पियन बन गई थी और जिस कुंजुरानी की बदौलत उन्होंने स्वयं भी भारोत्तोलक बनने का निश्चय किया था, उसी कुंजुरानी के 12 वर्ष पुराने राष्ट्रीय रिकॉर्ड को उन्होंने 2016 में 192 किलोग्राम वजन उठाकर तोड़ दिया था। 2014 में ग्लासो कॉमनवेल्थ खेलों में 48 किलो भारवर्ग में चानू ने भारत के लिए रजत पदक जीता था। रियो ओलम्पिक में पराजय के बाद मीराबाई ने 2017 में अनाहेम में हुई विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में कुल 194 किलो (स्नैच में 85 और क्लीन एंड जर्क में 107) वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता था। इसके लिए उन्हें वर्ष 2018 में राजीव गंधी खेल रत्न और उसके बाद पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। 2018 में कॉमनवेल्थ खेलों में भी वह स्वर्ण जीतने में सफल हुई और उसी साल सीनियर महिला राष्ट्रीय भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में भी दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता। 2020 में ताशकंद एशियाई चैम्पियनशिप में मीराबाई को कांस्य पदक हासिल हुआ था। सही मायनों में देश की आधी आबादी के लिए तो मीराबाई चानू की सफलता बेहद प्रेरणादायी है।

नीरज ने खत्म किया एथलेटिक्स चैपियनशिप में 19 साल का सूखा

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में भारतीय खिलाड़ी पिछले कुछ समय से बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। इन दिनों राष्ट्रमंडल खेलों में भी भारतीय खिलाड़ी सराहनीय प्रदर्शन कर रहे हैं। देश को गौरवान्वित करते ऐसे ही खिलाड़ियों में भारतीय एथलीट नीरज चोपड़ा भी शामिल हैं, जिन्होंने टोक्यो ओलम्पिक में इतिहास रचने के एक साल बाद पिछले दिनों अमेरिका के ओरेंगन में विश्व एथलेटिक्स चैपियनशिप में भी भारतीय महिला भारोत्तोलक अब तक कुंजुरानी से ज्यादा पदक नहीं जीत सकी है। जब चानू ने भारोत्तोलक बनने का निश्चय किया, उस समय तक उन्हें ओलम्पिक खेलों के बारे में कुछ नहीं पता था, तब उनका एक ही सप्ता था कि वह इस खेल में कोई बड़ा सा पदक जीतें। 2007 में जब मीराबाई ने प्रैक्टिस शुरू की तो उनके पास लोहे का बार नहीं था, इसलिए वह तब बांस से ही प्रैक्टिस किया करती थी। चूंकि गांव में कोई ट्रेनिंग सेंटर नहीं था, इसलिए वह 12 साल की उम्र में प्रैक्टिस के लिए ट्रक पर सवार होकर 50-60 किलोमीटर दूर ट्रेनिंग के लिए जाया करती थी। हालांकि चानू का बचपन पहाड़ से जलावान की लकड़ियाँ बीनते हुए संधर्षों के दौर से गुजरा लेकिन इन संधर्षों का मजबूती से सामना करते हुए ओलम्पिक विजेता बनकर 4 फुट 11 इंच की छोटे से कद की चानू ने साबित कर दिखाया कि हौसले बुलांद हों तो मंजिल तक पहुंचना नामुमकिन नहीं होता।

मीराबाई 17 साल की उम्र में जूनियर चैम्पियन बन गई थी और जिस कुंजुरानी की बदौलत उन्होंने स्वयं भी भारोत्तोलक बनने का निश्चय किया था, उसी कुंजुरानी के 12 वर्ष पुराने राष्ट्रीय रिकॉर्ड को उन्होंने 2016 में 192 किलोग्राम वजन उठाकर तोड़ दिया था। 2014 में ग्लासो कॉमनवेल्थ खेलों में 48 किलो भारवर्ग में चानू ने भारत के लिए रजत पदक जीता था। रियो ओलम्पिक में पराजय के बाद मीराबाई ने 2017 में अनाहेम में हुई विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में कुल 194 किलो (स्नैच में 85 और क्लीन एंड जर्क में 107) वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता था। इसके लिए उन्हें वर्ष 2018 में राजीव गंधी खेल रत्न और उसके बाद पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। 2018 में कॉमनवेल्थ खेलों में भी वह स्वर्ण जीतने में सफल हुई और उसी साल सीनियर महिला राष्ट्रीय भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में भी दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता। 2020 में ताशकंद एशियाई चैम्पियनशिप में मीराबाई को कांस्य पदक हासिल हुआ था। सही मायनों में देश की आधी आबादी के लिए तो मीराबाई चानू की सफलता बेहद प्रेरणादायी है।

2016 में पोलैंड में जूनियर चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने के बाद ही नीरज को सेना में जूनियर कमीशंड ऑफिसर के तौर पर नियुक्त दी गई थी। मार्च 2021 में उन्होंने ईंडियन ग्रैंड प्रिक्स-3 में 88.07 मीटर जैवलिन थ्रो



के साथ अपना ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया था। जून 2021 में पुरुषगाल के लिस्बन शहर में हुए मीटिंग सिड्डे डी लिस्बोआ ट्रॉनमैट में नीरज ने स्वर्ण पदक जीता था। 2016 में उन्होंने साउथ एशियन गेम्स में 82.23 मीटर दूर, 2017 में एशियन एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में 85.23 मीटर दूर और 2018 में इंडोनेशिया के जकार्ता में हुए एशियाई खेलों में 88.06 मीटर दूर भाला फैंकर स्वर्ण पदक जीते। एशियाई खेलों के इतिहास में अब तक भालाकंक में भारत को केवल दो ही पदक मिले हैं और नीरज पहले ऐसे भारतीय एथलीट हैं, जिन्होंने एशियन खेलों में स्वर्ण पदक जीता। उनसे पहले वर्ष 1982 में गुरेतेज सिंह को कांस्य पदक मिला था। नीरज का अभी तक का सर्वश्रेष्ठ प्रयास 30 जून 2022 को स्वीडन में स्टॉकहोम डायमंड लीग 2022 में रहा है, जहां उन्होंने 89.94 मीटर के अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड भी बनाया।

वैसे नीरज की एथलेटिक्स में आने की कहानी भी दिलचस्प है। उन्होंने या उनके परिवार के किसी सदस्य ने सपने में भी नहीं सोचा था कि नीरज एथलेटिक्स में किसीत आजमाएंगे। बचपन में नीरज काफी मोटे और थुलथुले थे, 13 वर्ष की आयु में उनका वजन करीब 80 किलोग्राम था और तब परिवारवालों के दबाव में उन्होंने एथलेटिक्स के जरिये अपना वजन कम करने का निश्चय किया। परिजनों ने उन्हें प्रतिदिन दौड़ लगाने को प्रोत्साहित किया ताकि वजन कम हो सके लेकिन नीरज को दौड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। एक दिन उनके चाचा उन्हें गांव से करीब 15 किलोमीटर दूर पानीपत के शिवाजी स्टेडियम ले गए। वहां नीरज ने कुछ खिलाड़ियों को भाला फैंक का अभ्यास करते देखा तो उन्हें इस खेल से ऐसा लगाव हुआ कि वे अपनी कुछ वर्षों की कड़ी मेहनत के बलबूते पर देश के लिए पूरी दुनिया में इतिहास रचने में सफल हो गए। अपनी श्रोड़ंग स्किल्स को बेहतर बनाने के लिए उन्होंने जर्मनी के बायो-मैकेनिक्स विशेषज्ञ क्लाउस बार्टोनित्ज से प्रशिक्षण लिया, जिससे उनके प्रदर्शन में निरन्तरता आई।

जिले में शैक्षणिक और बौद्धिक विकास : पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के छात्र छात्राओं के लिए कल्याण विभाग तत्पर



निर्गमाणीय छात्रवास, चमोरीहरेया



राजेश पंजिकार ब्यूरो चीफ

बांका जिले में कल्याण विभाग के द्वारा पिछड़ा वर्ग और एवं अति पिछड़ा वर्ग के लिए विभिन्न तरह की लाभकारी योजनाएं गतिमान हैं। इस क्रम में पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के लिए खाद्यान्न योजना छात्रावास अनुदान योजना सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के साथ-साथ मेघा वृत्ति छात्रवृत्ति योजना प्रमुख हैं। बरहाल पिछले कई वर्षों से मैट्रिक छात्रवृत्ति, पोस्ट मेधावी छात्रवृत्ति योजना का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग द्वारा किया जा रहा है। पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उसके शैक्षणिक और बौद्धिक विकास के साथ-साथ नई उपलब्धि प्राप्त कर रहे हैं। जिले के पीबीएस कॉलेज में अनुसूचित जाति जनजाति छात्रावास क्रियाशील है इसके लिए नामित 50

विद्यार्थियों को प्रति व्यक्ति विद्यार्थी रुपया 1000 प्रति माह के साथ-साथ 15 किलो खाद्यान्न गेहूं चावल प्रदान किया जा रहा है। साथ ही साथ कटोरिया आदर्श मध्य विद्यालय छात्रावास जयपुर विद्यालय में छात्रावास चांदन में छात्रावास के साथ-साथ जिले में छात्राओं के लिए आवासीय विद्यालय जिले के कटोरिया के मुक्ति निकेतन में 1 से 10 वर्ग की छात्राओं के लिए संचालित है जिसमें 215 से अधिक छात्राएं नामित हैं। प्रत्येक वर्ग जनवरी में नामांकन विभागीय आदेश के अनुसार किया जाता है। पठन-पाठन एवं अन्य जरूरी खर्च के लिए छात्र-छात्राओं के खाते में सरकार द्वारा प्रदत्त राशि का स्थानांतरण समय विभाग के द्वारा किया जाता है। जिससे पठन-पाठन के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी संभव हो सके। जिला अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण पदाधिकारी यदुनाथ सिंह ने बताया कि जिले के विभिन्न प्रखंडों में पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न तरह की लाभकारी योजनाएं क्रियाशील हैं। जिससे उनके पठन-पाठन के साथ-साथ शैक्षिक विकास के लिए त्याग विभाग तत्पर है। प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति तथा पोस्ट मैट्रिक मेधावी छात्रवृत्ति योजना का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग द्वारा की जा रही है।

साथ-साथ शैक्षिक विकास के लिए कल्याण विभाग तत्पर है प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति तथा पोस्ट मैट्रिक मेधावी छात्रवृत्ति योजना का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग द्वारा की जा रही है।

जिला अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण पदाधिकारी यदुनाथ सिंह ने बताया कि जिले के विभिन्न प्रखंडों में पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न तरह की लाभकारी योजनाएं क्रियाशील हैं। जिससे उनके पठन-पाठन के साथ-साथ शैक्षिक विकास के लिए त्याग विभाग तत्पर है। प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति तथा पोस्ट मैट्रिक मेधावी छात्रवृत्ति योजना का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग द्वारा की जा रही है।

- जिला कल्याण पदाधिकारी, बांका



चांदन और कटोरिया के गोदाम से, हर माह कहाँ जाता है लाखों का अनाज



आम्रत कुमार दुबे की रिपोर्ट
(बांका)

चांदन और कटोरिया गोदाम से हर माह लाखों का चावल और गेहूं आखिर कहाँ गायब हो जाता है। और इस आज तक बार बार शिकायत के बाबजूद कोई छानबीन क्यों नहीं होता है। जबकि इसका सीधा खायियाजा पीडीएस डुकानदार को सहना पड़ता है। राशन कार्ड धारी उपभोक्ताओं को मात्रा से कम राशन दिए जाने की शिकायत इन दिनों लगातार मिल रही है। जिसके लिए पदाधिकारियों द्वारा पीडीएस डुकानदार को बलि का बकरा बनाया जाता है। लेकिन इसकी सच्चाई पर किसी ने ध्यान नहीं दिया है। आम लाभुक जिसको जिम्मेदार लोग सीधे डीलर को मानते हैं। मगर इसके पीछे हकीकत कुछ और है। एसएफसी गोदाम से ट्रांसपोर्टर द्वारा होम स्ट्रेप डिलीवरी देने के दौरान प्रत्येक बोरे में दो से आठ किलो तक अनाज कम दिया जाता है। इतना ही नहीं एजीएम दावे के साथ डीलरों से प्रत्येक बोरे पर एक किलो अनाज कम देने की बात करता है। इसका विरोध करने वाले डीलरों को फटा बोरा कम राशन दिए जाने की शिकायत आम है। ऐसे में डीलर सही मात्रा में उपभोक्ताओं को राशन दे तो दे कैसे इस पर कभी ध्यान नहीं दिया गया। कई डीलरों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि हर माहे प्रत्येक बोरे में दो किलो से लेकर आठ किलो वजन कटौती किया गया। खाद्यान्न कालाबाजारी को लेकर कटोरिया एवं चांदन पहले से ही चर्चा में हैं। जिसमें अधिकारी से लेकर कई सफेदपोश की इस गोरखधंधे में चांदी कट रही है। सिर्फ जुलाई महीने की बात करें तो ओनलाइन रिपोर्ट के अनुसार चांदन प्रखंड में गेहूं 151086 किलो एवं 613820 किलो चावल उपलब्ध कराया गया है। जबकि कटोरिया प्रखंड में गेहूं 167103 किलो एवं 670128 किलो राशन उपलब्ध कराया गया है। ऐसे में सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रत्येक 50 किलो के बोरे में दो किलो से लेकर आठ किलो तक राशन कम दिया जाता है तो कितनी बड़ी मात्रा में गरीबों को मिलने वाले खाद्यान्न की कालाबाजारी हो रही है। तो वह जाता कहाँ है। और कौन कौन इसमें हिस्सेदार है। नियमानुसार प्रत्येक डीलर को आवंटन के अनुसार वजन कर राशन उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान है। मगर चांदन एवं कटोरिया प्रखंड में अफसरशाही चरम पर होने के कारण मनमाने तरीके से डीलरों को राशन उपलब्ध कराया जाता है। कम राशन देने का विरोध करने वाले डीलरों को परिणाम भुगतने की धमकी दी जाती है। यहाँ तक कि डुकानों पर लगातार करा कर अनाज कम देने और अधिक राशि लेने की बात बताकर परेशान किया जाता है। ऐसे में उपभोक्ताओं को उनके हक का सही मात्रा में राशन



मिलने की संभावना दूर तलक संभव नहीं दिख रहा है। अनुमान लगाया जा रहा है कि इसकी सही जांच की जाए तो खाद्यान्न कालाबाजारी का एक बड़ा ऐकेट का पदार्पण हो सकता है। इस संबंध में पूछने पर एमओ मिथिलेश कुमार झा ने बताया कि मेरे योगदान

के बाद हाल ही में मुझे गोदाम से कम अनाज देने की शिकायत मिली थी। ऐपर मेरे द्वारा वरीय पदाधिकारियों से बात कर इस माह से कुछ सुधार किया गया है। और अब अगले माह से मैं खुद निगरानी करते हुए तोल का गोदाम से अनाज दिला दिया करूँगा।

अनेकता ने एकता का प्रतिष्ठाप है कांवरिया मेला



आमोद दुबे की रिपोर्ट

श्रावणी मेला इस समय अपने पूरे पर्वान पर आ गया है। मेले की भव्यता में जैसे चार चांद लग गया हो। वही प्रशासनिक तैयारी और साफ-सफाई भी बांका जिले में सबसे बेहतर देखी जा रही है। जिसमें जिलाधिकारी सहित स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों और पंचायत प्रतिनिधियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। श्रावणी मेले की तीसरी सौमधारी आने वाली है इस बाबत संपूर्ण कांवरिया पथ पर कांवरिया की भीड़ देखते ही बनती है। बिहार के गंगाधाम से झारखण्ड के बाबाधाम तक संपूर्ण कांवरिया पथ बोल बम के जयकारे के साथ केसरिया परिधानों के कारण सारा कांवरिया पथ केसरिया समुद्र में तब्दील हो गया है। इस वर्ष भी प्रत्येक वर्ष की तरह कई तरह के कांवरिया संपूर्ण रास्ते में अपने जलवे बिखेर रहे हैं। कुछ कांवरिया सिर्फ बेलपत्र खाकर अपनी यात्रा कर रहे हैं। तो कोई सिर्फ अरवा चावल खाकर बाबा धाम की ओर चल रहे हैं। जबकि कई कांवरिया ऐसे भी हैं जो उपवास कर कुछ फलाहार कर बाबा की ओर बढ़ते जा रहे हैं। कई बम ऐसे भी हैं जो इस रास्ते पर सिर्फ बाबा का प्रसाद भांग और गांजा का सेवन कर ही भोलेनाथ को जल चढ़ाते हैं। सीतामढ़ी के नरेश बम और मधुबनी के राजू बम सिर्फ बेलपत्र खाकर ही जल चढ़ाने का प्रण लिए हुए हैं। उन्हें एक पुत्र की इच्छा है। नेपाल के आए राजू बम और सुमंती बम फलाहारी जल लेकर जा रहे हैं उसने बताया कि उन्हें बाबा की कृपा से नौकरी मिली है। इसलिए उसी वर्ष से लगातार बाबा भोलेनाथ को जल अर्पण कर रहे हैं। मिथिला के हरेंद्र बम का विश्वास है कि बाबा की कृपा से उनकी पत्नी की गंभीर बीमारी से ग्रसित जल्दी ही ठीक हो जाएगी और उसे भी बाबा भोलेनाथ के दर्शन के लिए आना पड़ेगा। उसी के जल्दी स्वस्थ होने के लिए हलवा खा कर जलाभिषेक कर रहे हैं। इसी प्रकार इस रास्ते पर कई रूपों में भी कांवरिया आते हैं जिसमें डाक बम, पैदल बम, दांडी बम, और खड़ेसरी बम भी हैं। डाकबम 24 घंटे के अंदर यात्रा पूरी करते हैं जबकि पैदल बम की कोई सीमा नहीं



होती। वहीं खड़ेसरी बम देवघर पहुंचने तक कहीं भी बैठते नहीं हैं। दांडी बम अपने शरीर को जमीन पर लेट कर यात्रा पूरी करते हैं। जिसे कम से कम एक माह का समय लगता है। इस प्रकार बोल बम के इस रास्ते में सभी बम एक समान बिना किसी भेदभाव के इस यात्रा पर चलते हैं। जिसकी कोई ना कोई मनोकामना होती है या उनकी मनोकामना पूर्ण हो चुकी होती हैं। पैंडित उमाशंकर पांडे बताते हैं कि सावन में जल अर्पण करने वाले की हर मनोकामना बाबा भोलेनाथ जरूरी पूरा करते हैं तभी इस यात्रा में लगातार भीड़ बढ़ती जा रही है।



श्रावणी मेला में कांवरियों की सेवा में जुटा महादेव इनकलेव परिवार सेवा शिविर के माध्यम से कांवरियों की जा रही निष्ठार्थ सेवा



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला शुरू होते ही विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं एवं आम जनों के द्वारा बाबा भोले शंकर के भक्तों की सेवा कर पुण्य की भागीदारी में अपने को शरीक कर रहे हैं। इसी क्रम में बांका जिले के महादेव इनकलेव प्राइवेट लिमिटेड संस्था के द्वारा के जिले के कटोरिया के कांवरिया पथ पर शिविर लगाकर कांवरियों की निस्वार्थ सेवा कर रहे हैं। कंपनी के जी.एम ने बताया कि श्रावणी मेला में कांवरिया पथ पर महादेव इनकलेव के द्वारा शिविर लगा है। जिसमें कांवरियों की सेवा मालिश, भोजन, गर्म पानी, चाय आदि, की निःशुल्क व्यवस्था है। हमारे कंपनी के 100 से अधिक कार्यकारी और कांवरियों की सेवा की जा रही है। जिसमें उन्हें चिकित्साय सुविधा भी प्रदान किया दिया जा रहा है। साथ ही हमारे संस्था द्वारा प्रदत्त एम्बुलेंस की सेवा भी इस शिविर के माध्यम से कांवरिया पथ पर क्रियाशील है। इस बार श्रावणी मेला

प्राइवेट लिमिटेड के सौजन्य से गंगा धाम से बाबा धाम जाने वाले कांवरिया भक्त जनों की सेवा में कांवरिया पथ के तरपतिया में निःशुल्क सेवा शिविर लगाया गया है।

शिविर के माध्यम से प्रतिदिन कांवरिया भक्तों की सेवा भक्ति धाव के साथ करते हुए, भोजन नाश्ता, फल चाय, गरम पानी, के साथ-साथ चिकित्साय सेवा, एवं एम्बुलेंस की सेवा भी प्रदान की जा रही है।

शुशील सारस्वत
जी.एम
महादेव इनकलेव प्राइवेट लिमिटेड बांका

में कांवरियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, जमुआ पुल पर महादेव इनकलेव प्राइवेट लिमिटेड की ओर से विशेष लोहे का बैरीकटिंग लगाया गया है। जिससे कांवरियों की यात्रा सुरक्षित हो सके। हर

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महादेव इनकलेव प्राइवेट लिमिटेड के सौजन्य से लगाए गए निःशुल्क सेवा शिविर के माध्यम से कांवरिया पथ पर कांवरियों की सेवा करने का सौभाग्य मिला है। सुल्तानगंज से देवघर तक की बाबा भक्तों के सफल एवं सुरक्षित पैदल कांवर यात्रा की हम कामना करते हैं।

केशव सिंह पहलवान
जी.एम
महादेव इनकलेव प्राइवेट लिमिटेड बांका

हर महादेव इनकलेव परिवार श्रावणी मेला के इस पवित्र मास में सभी कांवरिया भक्त जनों का गंगा धाम से बाबा धाम की सुरक्षित एवं सफल कांवर यात्रा की कामना करता है।

जिला परिषद माध्यमिक शिक्षक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षक नियोजन समारोह का हुआ आयोजन

अंगूष्ठ कुमार जिला पदाधिकारी बांका थे समारोह के मुख्य अतिथि



जिला पदाधिकारी अंगूष्ठ कुमार द्वारा मीनी सभागार में शिक्षकों को संबोधित करते हुए।



जिला पदाधिकारी अंगूष्ठ कुमार द्वारा नवनियुक्त शिक्षकों नियुक्ति पत्र प्रदान करते हुए।



मीनी सभागार में उपस्थित नवनियुक्त शिक्षकों के साथ जिला पदाधिकारी अंगूष्ठ कुमार व अन्य।



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले में जिला परिषद शिक्षक नियोजन समिति ने 29 चयनित शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपा. समाजसेवा मिसी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में सभी शिक्षकों ने नियुक्ति पत्र प्राप्त किया. नियुक्ति पत्र प्राप्त सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षक विद्यालय में 31 जुलाई से योगदान करेंगे. इन शिक्षकों की बहाली प्रक्रिया पिछले तीन साल से चल रही थी. तीन साल की लंबी प्रक्रिया के बाद

जिला परिषद के हाई स्कूल एवं रिक्त 1000 से अधिक शिक्षकों के खाली पदों के खिलाफ 29 शिक्षकों की नियुक्ति हुई है. सभी शिक्षकों को उनके विकल्प के अनुसार विद्यालय भी आवंटित कर दिया गया है. अधिकांश आवेदकों को पहला विकल्प मिल गया है. शिक्षकों को जिलाधिकारी अंगूष्ठ कुमार जिला परिषद अध्यक्ष सुनील कुमार सिंह, एडीएम माधव कुमार सिंह, तथा जिला परिषद समिति की अध्यक्ष प्रीति सिंह ने नवनियुक्त शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपा. जिलाधिकारी ने सभी नवनियुक्त शिक्षकों को शुभकामनाएँ दी. तथा अध्यापन के पवित्र कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निर्वहन करने

के लिए प्रेरित किया. नियुक्ति पत्र प्राप्त करने के बाद सभी शिक्षक में खुशी का माहौल था. नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वाले शिक्षकों में से स्वाति सिंह, नवीन कुमार, पल्लवी रानी, संजय सिंह, ज्योति कुमारी मिश्रा, धर्मेंद्र कुमार निराला, प्रभात कुमार मालवीय, भोला प्रसाद सिंह, पूजा कुमारी रूबी कुमारी, राजकुमार तारी, संतोष कुमार अमृत कुमार सिंह, शशि कुमार, निलेश कुमार, रंजना कुमारी, प्रतिमा कुमारी, मधु मिश्रा, स्वर सुधा हंस, हरे कृष्ण जिजासु, पृष्ठा कुमारी, ज्योति कुमारी, विकास प्रसाद सिंह, अंजू नीलम कुमारी, सुबोध शकर, दिलीप कुमार पंडित, सवीहा नाज, एवं रूबी सिंह आदि प्रमुख थे.

आंखों के नियमित जांच एवं उत्तम क्वालिटी के ब्रांडेड चृत्मा प्रतिष्ठान ऑप्टिकल प्लानेट, जन सेवा के लिए तत्पर



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका में आंखों के नियमित जांच एवं उत्तम क्वालिटी के ब्रांड चृत्मा प्रतिष्ठान ऑप्टिकल प्लानेट ने लगातार जन सेवा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाया है। इस प्रतिष्ठान के माध्यम से योग्य चिकित्सकों के द्वारा नियमित आंखों की जांच कर जरूरतमंद लोगों को सस्ते दरों पर चश्मा मुहैया कराया जाता है। ऑप्टिकल प्लानेट्स के प्रोपराइटर रवि रंजन सिंह ने बताया कि हमारे यहां टाइटन, रेबेन,

फास्ट ट्रैक, कारिजल ब्रांड का चश्मा यहां उपलब्ध है, साथ ही साथ सस्ता से सस्ता भी ब्रेड़ का चश्मा भी उपलब्ध है। रवि रंजन सिंह ने आगे बतायाकि मेरा उद्देश्य है जन सेवा करना मेरे संस्थान से कोई वापस ना लौटे क्योंकि हर प्रकार के चश्मे से युक्त मेरा प्रतिष्ठान का एक ही उद्देश्य है। जन सेवा करना, पिछले कई महीनों से अपने प्रतिष्ठान के माध्यम से जनसेवा का भी कार्य लगातार जारी है। हमारे यहां आए हुए मरीजों का योग्य चिकित्सकों के द्वारा आंखों की नियमित जांच की जाती है।

कविता

डॉ. प्रभा रानी



जानते हो तुम?

तुम होते तो जिंदगी संवर जाती

तुम होते तो कविता निखर आती

तुम होते तो सूरज मद्धिम होता

तुम होते तो चांद भी शर्माता...!

तुम होते तो वीणा के स्वर गूंजते

तुम होते तो जलतरंग बज उठते

तुम होते तो दिल विक्रल नहीं होता

तुम होते तो किसी का ख्याल नहीं आता!

तुम होते तो भूख नहीं लगती

तुम होते तो प्यास भी शर्माती

तुम होते तो जिंदगी सुरीली होती

तुम होते तो मधुबन छा जाता...!

पर तुम नहीं हो, कहीं नहीं...

धूप अब भी आती है

बादल अब भी छाते हैं

पंछी अब भी गाते हैं

भंवरे भी गुनगुनाते हैं

बस अब उन्माद नहीं होता

किसी से प्यार नहीं होता!!!

लायंस क्लब ऑफ गोड्डा का मनाया गया ८वां स्थापना दिवस

डॉ प्रभा रानी प्रसाद को मिला लायन ऑफ द ईयर का अवार्ड



दृष्टि प्रज्ञपति कर्ता कार्यक्रम का शुभारंभ करते लायंस मेंबर।



अवार्ड प्राप्त करती डॉ प्रभा रानी।



कार्यक्रम में उपस्थित लायंस क्लब के अधिविषय।

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

लायंस क्लब ऑफ गोड्डा का आठवा स्थापना दिवस का भव्य समारोह का आयोजन स्थानीय होटल तुष्टिया इंटरनेशनल में आयोजित किया गया। सामाजिक सरोकार से जुड़े हुए हैं कार्यों के लिए विश्व प्रसिद्ध यह चर्चित संस्था लायंस क्लब के द्वारा गोड्डा में अनेक ऐसे कार्य किए हैं। जिससे ना कि आमजन लाभान्वित हुए हैं। बल्कि आपदा के समय में पीड़ित लोगों के बीच भोजन के साथ साथ दवा, चिकित्सीय सुविधा एवं बचाव कार्य प्रदान करते हैं भी अपनी भागीदारी निश्चित किये हैं। झारखण्ड

राज्य का गोड्डा जिला पूर्व में अति पिछड़ा जिला माना जाता था। जहां आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण संसाधनों की कमी भी थी। खनिज संपदा से परिपूर्ण यह जिला औद्योगिक क्षेत्र में विकसित होकर, सड़क मार्ग के अलावे अरेल मार्ग से भी जुड़ कर देश की राजधानी दिल्ली तक अपनी पहचान बनाई है। इसमें क्षेत्रीय सांसद माननीय निशिकांत दुबे जी अहम भूमिका रही है। लायंस क्लब गोड्डा के सम्मानित सदस्यों में से डॉ प्रभा रानी प्रसाद लायंस क्लब ऑफ गोड्डा की एक बहुत महत्वपूर्ण अंग मानी जाती है। जिन्होंने बतौर चिकित्सा पदाधिकारी होने के साथ-साथ कोरोना काल में मानव सेवा कर समाज

में एक अलग पहचान बनाई है। लायंस क्लब ऑफ गोड्डा के द्वारा पिछले दिनों आयोजित आठवां स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ जी लायन डॉ माधेश्वर सिंह, वी डी जी - १ लायन डॉ विनोद अग्रवाल, और बीडीजी - २ लायन गणवत मल्लिक, की उपस्थिति में ऊजावां प्रेसिडेंट लायन राजीव सिंह के द्वारा लायन ऑफ द ईयर सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने के उपरांत डॉ प्रभा रानी प्रसाद ने चर्चित बिहार को बताया कि गुड्डा जिले के सभी सम्मानित एवं आदरणीय हमारे लायन सदस्यों के साथ साथ अपने सभी जिले वासियों का भी हार्दिक अभिवादन करती हूं। जिन्होंने हमें इस याग्य समझा।

आजादी का अमृत महोत्सव

बिजली महोत्सव उज्ज्वल भारत, उज्ज्वल भविष्य पावर @ 2047 का बांका में हुआ भव्य आयोजन



बिजली महोत्सव का दीप प्रज्ञवलित कर शुभारंभ करते अतिथियाँ।



राजेश पंजिकार ब्लूरो चीफ

आजादी के 75 वें वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्म में देशभर में आयोजित "आजादी का अमृत महोत्सव" मनाने के क्रम में दिनांक - 28/07/2022 को समाहरणालय सभागार बांका में विद्युत नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सहयोग से बिजली महोत्सव उज्ज्वल भारत उज्ज्वल भविष्य-पावर@2047 का सर्वप्रथम शुभारंभ दीप प्रज्ञवलित कर किया गया। उक्त कार्यक्रम में माननीय सदस्य बिहार विधानसभा क्षेत्र, बांका श्री राम नारायण मंडल, माननीय सदस्य बिहार विधानसभा क्षेत्र, बेलहर श्री मनोज यादव, जिला पदाधिकारी, बांका श्री अतुल कुमार, उप विकास आयुक्त, बांका, अपर समाहर्ता, बांका, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, बांका, उप निर्वाचन पदाधिकारी, बांका, बांका सभापति नगर परिषद, श्री संतोष सिंह, महाप्रबंधक, श्री एम्पी शहर, उप महाप्रबंधक, श्री अभिषेक मेहरा उपस्थित थे। जिला पदाधिकारी, बांका द्वारा संबोधन में बिजली की उपयोगिता पर बात करते हुए बताया गया कि पहले 15 घंटे के आसपास बिजली थी पर अब शहरी क्षेत्रों में लगभग 24 घंटे और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 22 घंटे मिलती है। इस मैके पर बड़े पैमाने पर आस-पास के गांव और शहर के बहुत से लोग उपस्थित हुए। इस दौरान गणमान्य व्यक्तियों ने भी बिजली से क्षेत्र में हो रहे विकास से हो रहे लाभों पर प्रकाश डाला और पिछले कुछ वर्षों में बिजली क्षेत्र के अभूतपूर्व वृद्धि पर अपनी राय खुल कर रखी। यह देखना सुखद रहा कि कार्यक्रम के दौरान कई लाभार्थियों ने अपने व्यवहारिक अनुभव आदि साझा किए।

केंद्र और राज्य के सहयोग से विद्युत क्षेत्र में हुई विभिन्न उपलब्धियों को मनाने के लिए बिजली महोत्सव को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया गया। इस दौरान विशेष तौर पर केंद्र सरकार की ओर से बिजली क्षेत्र में हासिल की गई प्रमुख



कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पदाधिकारी अनंतलुत कुमार।

उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया, जिसमें कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियां निम्न प्रकार हैं:-

बिजली उत्पादन क्षमता 2014 में 248554 मेगावाट से बढ़कर आज 400000 मेगावाट हो गई है, जो हमारी मांग से 185000 मेगावाट ज्यादा है।

भारत अब अपने पड़ोसी देशों को बिजली निर्यात कर रहा है।

पूरे देश को एक ग्रिड में जोड़ने के लिए 163000 सर्किट किलोमीटर (सी.के.एम.) ट्रांसमिशन लाइने जोड़ी गई, जो एक फ्रीक्वेंसी से संचालित हो रही है, लद्दाख से कन्याकुमारी तक और कच्छ से म्यानमार तक यह दुनिया के सबसे बड़े एकीकृत ग्रिड के रूप में उभरा है।

इस ग्रिड का इस्तेमाल करके हम देश के एक कोने से 112000 मेगावाट बिजली पहुंचा सकते हैं।

ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा लक्ष्य निर्धारित किया गया ताकि 2030



सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

तक अक्षय ऊर्जा स्रोतों से हमारी उत्पादन क्षमता का 40 फीसदी पहुंच जाएगा। ऊर्जा मंत्रालय के द्वारा यह लक्ष्य शेड्यूल से 9 साल पहले नवंबर 2021 में ही हासिल कर लिया गया है। अक्षय ऊर्जा स्रोतों से 163000 मेगावाट से भी अधिक बिजली पैदा की जा रही है।

हमारा देश दुनिया में अक्षय ऊर्जा क्षमता का तेज गति से विकास कर रहा है। 201722 करोड़ रुपए की कुल लागत से विद्युत वितरण व्यवस्था सुट्ट़ किया गया है। पिछले 5 वर्षों में बिजली की आधारभूत संरचना के तहत कई कार्यों को पूरा किया गया है। इनमें 2921 नए सब-स्टेशन बनाना, 3926 सब - स्टेशन का विस्तार, 604465 सीकेएम एलटी लाइन स्थापित करना, 268838 11 केवी एचडी लाइन स्थापित करना, 122123 सीकेएम कृषि फीडरों का फीडर पुथक्करण आदि शामिल है। 2015 में ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति की उपलब्धता औसतन 12.5 घंटे थी। जो अब बढ़ कर औसतन 22.5 घंटे तक हो गई है।

सरकार द्वारा बिजली उपभोक्ताओं के अधिकार के तहत नियम, 2020 पेश किया गया। इसके तहत -

नए बिजली कनेक्शन प्राप्त करने की अधिकतम समय सीमा अधिसूचित की गई है। समय पर बिजली की बिलिंग का अधिसूचित किया गया।

मीटर संबंधी शिकायतों को दूर करने के लिए समय-सीमा अधिसूचित की गई है।

राज्य नियामक प्राधिकरण के द्वारा सेवाओं के लिए समय-सीमा अधिसूचित कर दी गई है।

उपभोक्ताओं को शिकायतों का निवारण करने के लिए उन्नरडटर द्वारा 24x7 कॉल सेंटर स्थापित किया जाएगा।



कार्यक्रम में सिरकट करते जिलाधिकारी व अन्य अधिकारीगण।

18 महीनों में 100 फीसदी घरेलू विद्युतीकरण (2.86 करोड़) का लक्ष्य हासिल किया। जिस दुनिया का सबसे बड़ा विद्युतीकरण अभियान माना गया।

सौर पंप को अपनाने के लिए योजना शुरू की गई जिसके तहत लाभुकों को केंद्र सरकार के द्वारा 30 फीसदी सब्सिडी दी जाएगी और राज्य सरकार के द्वारा 30 फीसदी सब्सिडी उपलब्ध कराई जाएगी शेष राशि में से 30 फीसदी ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

आगंतुकों और मेहमानों के साथ जुड़ने के लिए, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, नुक़्ક़ नाटक और विद्युत क्षेत्र पर बनी लघु फिल्मों का स्क्रीनिंग आदि का आयोजन किया गया। भारी भीड़ को देखते हुए यह सुनिश्चित किया गया कि सभी सोशल डिस्टेंसिंग और मास्क पहनने जैसे कोविड सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन जरूर करें। इसके साथ ही, इस दौरान सभी उपस्थित लोगों को मास्क आदि भी वितरित किए गए।

कांवरियों की सेवा में जुटे बांका नगर परिषद अध्यक्ष बम भोले के जयकारे से गिलती है ऊर्जा



कांवरिया पथ पर सिरकर करते हुए जिला नगर परिषद अध्यक्ष संतोष सिंह व अन्य।



राजेश पुजिकार (ब्यूरो चीफ)

सावन का पवित्र माह शुरू होते ही बम बम भोले के जयकारे से शिव भक्तों को नई उर्जा प्राप्त होती है। बांका जिले में श्रावणी मेला के प्रारंभ होते ही कांवरिया पथ भगवा रंग से रंग जाता है, एवं कांवरियों के "बोल बम का नारा है बाबा एक सहारा है" से गुजायामान रहता है। सावन के पवित्र मास में कांवरिया, सुल्तानांज उत्तरवाहिनी गंगा से जल भर कर पांव पैदल 110 किलोमीटर की यात्रा तय कर बाबा

बैद्यनाथ धाम देवघर में जल अर्पित करते हैं। सावन माह में भक्तों का जुनून दोगुना हो जाता है। एक तरफ बम भोले के जयकारों की आवाज गूंज रही होती है तो कुछ काम और तो कुछ भक्त कांवरमें जल भर कर शिव की भक्ति में लीन हो जाते हैं। शरीर पर केसरिया रंग और कंधे पर लचकन बांस के कावरं से श्रद्धालुओं का उत्साह दोगुना दिख जाता है। इस कावरिया पर पर कुछ भक्त जनों की अपार श्रद्धा भी उमड़ पड़ती है। जहां शिव के माध्यम से कांवरियों की सेवा करते हैं इसी क्रम में बांका के नार परिषद अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह कावरिया पथ पर धन्यवाद बोल बम सेवा समिति द्वारा संचालित कावरिया सेवा

शिवर में शिव भक्तों की सेवा में अपने को लीन कर लिए हैं। स्वयं अपने हाथों से फलाहार और चाय का वितरण कर बाबा भोले की भक्तों की सेवा कर अपने को धन्य समझ रहे हैं। संतोष कुमार सिंह ने चर्चित बिहार को बताया की कांवरिया पथ पर शिव भक्तों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे हमें नई ऊर्जा मिल रही है* उन्होंने संपूर्ण नगर परिषद के निवासियों एवं अपने सभी सहकर्मियों, अधिकारियों एवं सगे संबंधियों के लिए बाबा बैद्यनाथ का स्मरण करते हुए, शिव भक्तों की सेवा कर सुख शांति और समृद्धि की कामना के बाबा बैजनाथ एवं उनके भक्तों को साष्ट्रांग दंडवत किया।

गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया में जीविका के द्वारा बकरे को लगाया गया जीवन रक्षक टीका



गुप्ता फार्म हाउस में जीविका दीटी द्वारा जानवरों का टीकाकरण।



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बिहार सरकार की परियोजना के तहत सतत जीविकोपार्जन के लिए चयनित महिलाओं को जीविका की ओर से शिविर लगाकर एक दिवसीय गैर आवासीय बकरा वैक्सीन का प्रशिक्षण बांका जिले के कटोरिया प्रखंड के बिलोनी रोड स्थित गुप्ता फार्म हाउस में दिया गया। वैक्सीनेशन की ट्रेनर डॉ प्रशांत कुमार ने बताया कि महामारी और प्लेग जैसी गंभीर बीमारियों से बचाव हेतु इन बकरों को जीविका दीदियों के द्वारा टीकाकरण का प्रशिक्षण दिया गया। जिससे वे आत्मनिर्भर बनकर सतत जीविकोपार्जन कर सकें। डॉ प्रशांत ने बताया कि भेड़ बकरी में फैलने वाली गंभीर बीमारियों से बचने के लिए टेटनेस वैक्सीन रक्षा ईटीवी प्लस टीका वैक्सीन दिया गया। फार्म हाउस के प्रबंधक प्रदीप कुमार गुप्ता ने बताया कि गौपालन, मुर्गी पालन बकरी पालन, के साथ-साथ मछली उत्पादन कर वे सतत जीविकोपार्जन कर रहे हैं। आगे उन्होंने बताया कि जीविका के द्वारा वैक्सीनेशन का जो कार्यक्रम चलाया जा रहा है, वह बहुत ही

उपयुक्त है, क्योंकि इससे पशुधन की रक्षा होती है। पशुपालन को प्रेरित करने हेतु सरकार की जो योजनाएं चल रही हैं। उसमें यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आए दिन पशु एवं बकरा बकरी में होने वाले गंभीर बीमारियों से पशुपालक परेशान हो जाते हैं। लेकिन सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस तरह के टीकाकरण के कार्यक्रम से गंभीर बीमारी जैसे प्लेग टिटनेस आदि से इन बकरों को और पशुओं को बचाया जा सकता है। जिससे पशुधन की रक्षा हो सके। क्रम में आज गुप्ता फार्म हाउस में जीविका दीदियों के द्वारा एवं मास्टर ट्रेनर डॉ प्रशांत कुमार के द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियां जैसे पशुओं के रखरखाव खानपान एवं रोग उपचार संबंधी विस्तृत जानकारी दी गई।

बिहार सरकार के द्वारा प्रतिस्थापित जीविका के द्वारा बकरों एवं पशुओं को दी जाने वाली जीवन रक्षक टीका एक अनोखी पहल है। जिससे सतत जीविकोपार्जन के साथ-साथ पशुधन की भी रक्षा होती है। आज गुप्ता फार्म हाउस में बकरों को जीविका दीदियों के द्वारा जीवन रक्षक टीका दिया गया मैं सरकार के इस पहल हेतु आभारी हूं।



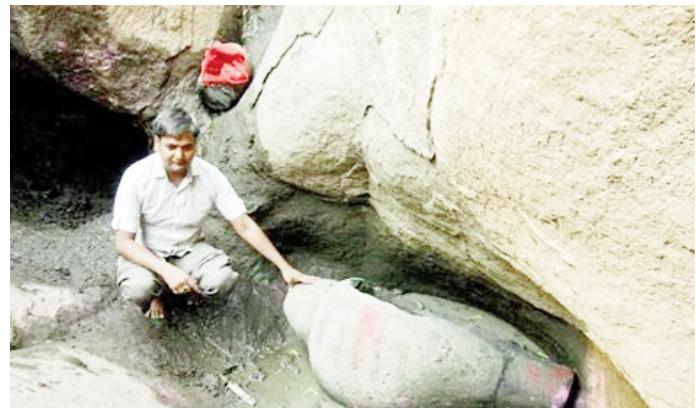
प्रदीप कुमार गुप्ता

प्रबंधक, गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया

मंदार पर्वत पर अवस्थित सीता कुंड की सफाई कार्य प्रारंभ वन एवं पर्यावरण विभाग के सौजन्य से ही है सफाई



पौराणिक सीताकुंड मंदार पर्वत।



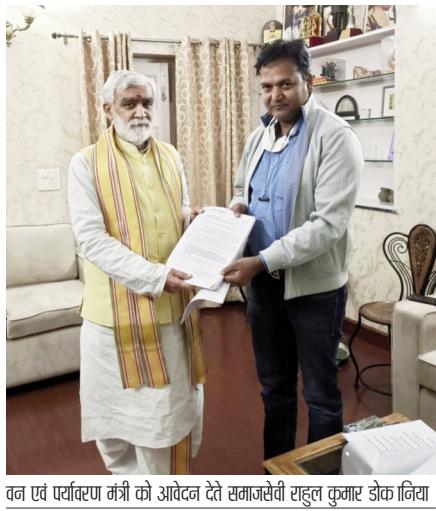
मंदार पर्वत पर सीताकुंड की सफाई।

मंदार पर्वत स्थित पांचजन्य शेष के साथ समाजसेवी राहुल कुमार डोकानिया।

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)



जिले के पर्यटक क्षेत्रों में से एक मंदार पर्वत प्रसिद्ध है। पुराणों में इस पर्वत की गाथाएँ अकित हैं। एक मान्यता के आधार पर समुद्र मंथन में इसी मंदराचल पर्वत का उपयोग किया गया था। मंदार पर्वत पर अवस्थित सीता कुंड की सफाई का कार्य प्रारंभ हो चुका है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार मंदार पर्वत अपने अंचल में 88 गुंडों को समेट तथा इनमें से कई कुंड आज भी दर्शनीय हैं। इनमें से सबसे बड़ा पर्वत के आधार पर अवस्थित है पापहरणी कुंड है। मकर संक्रान्ति एवं आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि पर दूर-दूर से हजारों श्रद्धालु इस कुंड में स्नान करने आते हैं। इस कुंड को छोर सागर का प्रतीक मानते हुए इसके मध्य में शेष शैया विष्णु का लक्ष्मी मंदिर बनाया गया है। जो इस कुंड के आकर्षण और भव्यता को और बढ़ा देता है। पाप हरणी के अलावा शंख कुंड भी एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल हैं। जिसके बारे में मान्यता है कि इसके मध्य में भगवान विष्णु का पांचजन्य शंख अवस्थित है। इसी शंख से शिव ने सागर मंथन के पश्चात निकले विष का



वन एवं पर्यावरण मंत्री को आवेदन देते समाजसेवी राहुल कुमार डोकानिया
पान किया था। जिसके प्रभाव से शंख नीलवर्ण का हो गया है। इसके अलावा सीताकुंड भी श्रद्धा का एक केंद्र है। जहां लोक प्रचलित मान्यता के अनुसार बनवास अवधि में मातासीता ने सूर्यकी उपासना में छठ व्रत किया था। पर्वत के मध्य में एक गुफा में विष्णु के नरसिंह रूप की एक मूर्ति है। जिसके नाम पर यह गुफा

नरसिंह गुफा के नाम से प्रचलित है।

इसी पर्वत पर अवस्थित सीता कुंड की सफाई के लिए पिछले कई वर्षों से बांका के समाजसेवी राहुल कुमार डोकानियां एवं उनके सहयोगियों के अथक प्रयास से वन्य जंतु एवं पर्यावरण विभाग के द्वारा इस सीता कुंड की सफाई का कार्य पिछले दिनों से प्रारंभ हो चुका है। कुछ दिन पूर्व राहुल कुमार डोकानियां के द्वारा वन जंतु एवं पर्यावरण विभाग के मंत्री अश्विनी चौके को लिखित आवेदन देकर मंदार पर्वत क्षेत्र में मोर अभ्यास केंद्रस्थापित करने तथा सीता कुंड की सफाई करने का अनुरोध किया था। ज्ञातव्य हो कि सीता कुंड का जल भी दूषित हो चुका था। इसका तक्षण ही विभाग के द्वारा निरीक्षण कर जांच कराई गई। जांच के क्रम में सीता कुंड का जल दूषित पाया गया। इसके लिए विभाग ने संज्ञान लेते हुए यह संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि सीता कुंड की सफाई का कार्य अति आवश्यक है। विभाग के द्वारा संज्ञान लिया गया और त्वरित कार्रवाई के साथ सीता कुंड की सफाई का काम द्वुतगति से जारी है। सीता कुंड की सफाई होना एक ओर जहां आस्था से जुड़ा है, वहीं दूसरी ओर मकर संक्रान्ति के अवसर पर इस कुंड में श्रद्धालु स्नान करने में अपने को पुण्य का भागीदार मानते हैं।

स्कूल टॉपर बन माता पिता का मान बढ़ाया वैभव आनंद ने विज्ञान संकाय में 95% लाया अंक

होनहार विवान के होत चिकने पात, इस कथन को चरितर्थ किया है ,चांदन के वैभव आनंद सिंह ने सीबीएसई 12वी.2022 के परिणाम आते ही जसीडीह पब्लिक स्कूल के स्कूल टॉपर के रूप में वैभव आनंद सिंह का नाम अंकित हो गया। यह उपलब्धि उसे विज्ञान संकाय में मिला है जिसमें 95 फीसदी अंक प्राप्त कर स्कूल टॉपर बन बन गया।

शिक्षित माता -पिता के सानिध्य में रह कर योग्य संस्थानों से पढ़ाई करते हुए ,वैभव कुमार सिंह ने यह उपलब्धि प्राप्त की है। इस उपलब्धि का श्रेय वैभव जहां एक ओर अपने माता-पिता को मानते हैं। वही योग्य शिक्षकों के द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हुए स्कूल टॉपर बन गया। मां सुमन सिंह प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय चांदन की प्रधारी प्रधानाध्यापिका है औ उन्होंने चर्चित बिहार को बताया की बतौर प्रधानाध्यापिका के पद पर रहते हुए .अपने विद्यालय के कार्यों को करते हुए। वैभव की पढ़ाई का प्रतिदिन खुद से से ध्यान रखना ,पढ़ाई के तौर-तरीकों को समझना ,और किन-किन विषयों में किस तरह की



वैभव आनंद सिंह



वैभव की मां सुमन सिंह

विषय में वैभव ने बताया कि तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर माता पिता, शिक्षकों के साथ-साथदेश में अपना नाम करने की मंशा है।

*****वाल-गोपाल वाटिका*****



वैदिका रानी **सोम्पू** **मिस्टी** **नीनाली**
Std-II Std-I Std-III Std-III



श्रीता धनराज std-8 आदित्य धनराज std-3 नेहल L.K.G

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

**प्रतिज्ञा
कुमारी**

इंडियन गैस एजेंसी,
बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

**गोविंद
राजगडिया**

बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

**अंजनी
कुमार राम**

उच्च वर्गीय लिपिक
जिला नजारत बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

**अमरेंद्र
कुमार साह**

प्रोफाइलर मंदार प्रिंटिंग प्रेस
बांका, मो. 7903417174



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

सुनील कु. सिंह

अध्यक्ष जिला परिषद
बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण
जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

रवीश कुमार

परामर्शी समिति अध्यक्ष सह प्रमुख
प्रखंड- चांदन जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस,
कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



अनिता देवी

मुखिया, व्याम पंचायत डोमसरनी
प्रखंड कटोरिया, जिला- बांका



उच्चेष्वर ठाकुर

समाजसेवी

ठाकुर जी केटरिंग

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



रवि रंजन सिंह
प्रोपराइटर, 8969703922

ऑप्टिकल प्लानेट
द्वारिका स्थान मार्केट
कटोरिया रोड बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएं

पुरुल कुमारी

पूर्व सांसद बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रमा रानी

महिला चिकित्सा पदाधिकारी, सदर अस्पताल, गोड्डा (झारखण्ड)



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएं

बेबी कुमारी घोष

वार्ड पार्षद, वार्ड नं-11, नगर परिषद, बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएं

चिरंजीव कुमार

निदेशक चाईल्ड लाईन, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



वैद्यनाथ सिंह

जिला निबंधन
पदाधिकारी, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



यदुनाथ सिंह

जिला कल्याण पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



विष्णु देव कुमार रंजन

जिला कृषि पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



संजय कुमार किल्कु

जिला मत्स्य
पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



आमित कु. रंजन

अंचलाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



विनाय पाल

सेवानिवृत्त
विशेष शाखा
पदाधिकारी, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ संजय

प्रखंड विकास
पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



संजय

जिलाकार्यक्रम पदाधिकारी
भी.आर.डी.एस, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



अशोक कुमार

जिला परिवहन पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



अरुण कुमार

M.V.I
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



दीनानाथ सिंह

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



विनय प्रसाद यादव

सीटी मेनेजर
नगर परिषद बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



कुमार रंजन

जिला खनन पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



अवधेश कुमार संजय प्रसाद

जिला खनन
निरीक्षक, बांका

जिला खनन
निरीक्षक, बांका

समस्त जिलेवासियों को नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं



सूर्य मृषण कुमार

निरीक्षक, माप
तौल बिभाग, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



दॉ. राम कुमार

प्रखंड विकास पदाधिकारी
चांदन, जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. सत्येन्द्र प्रसाद यादव

अध्यक्ष कृसाहा
वन समिति
जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



अनिल सिंह

संस्थापक - मुक्ति
निकेतन संस्थान
कटोरिया, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



दॉ. जगत कु. शर्मा

प्रो. शक्ति इलाहा
स्कूल मार्केट कवहरी रोड, बांका,
8084789834

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. लक्ष्मण पंडित

एम.बी.बी.एस.
एम.एस. सर्जरी
सदर, अस्पताल, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



आचार्य जयनन्दन शास्त्री

आवासीय मार्शल
एकेडमी, खेसर, बांका,
मो.: 8002850364

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



कुलदीप पास्वान

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-25
नगर परिषद बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



उत्क कुमार

बांका

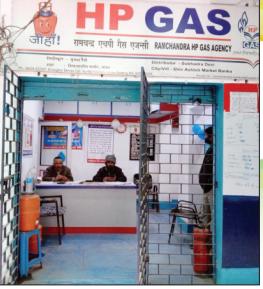
समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. बलराम मंडल

जिला कृषि पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



एचपी गैस एजेंसी

शिव आशीष
मार्केट, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



श्री निवास श्री

निदेशक
ज्ञान गंगा आवासीय बाल
विद्यालय, परिदन रोड, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. नौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S.
(Darbhanga) R.M.P.H.
(Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुर्गा
बांका, मो.: 9955601568

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं



सुमन सिंह

प्रभारी प्रधानाध्यापिका
प्रोजेक्ट कन्या उच्च
विद्यालय चांदन- जिला
(बांका)

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

आई.सी.डी.एस



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबांधन की हार्दिक शुभकामनाएं

संतोष कु. सिंह

अध्यक्ष
नगर परिषद, बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबांधन की हार्दिक शुभकामनाएं

निवेदक

विनीता प्रसाद

उपाध्यक्ष, नगर परिषद, बांका



समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबांधन की हार्दिक शुभकामनाएं

जितेंद्र कु. राय

वार्ड पार्षद, वार्ड नं-26
नगर परिषद, बांका

समस्त जिलेवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबांधन की हार्दिक शुभकामनाएं



मयानी देवी

वार्ड पार्षद
वार्ड नंबर 6
नगर परिषद बांका



ई० निर्गल कुमार

समाजसेवी, बांका

